Title: Further discussion on the statement made by the Prime Minister in the House on 27th May, 1998 on the recent nuclear tests in Pokhran raised by Shri Indrajit Gupta on the 27th May, 1998.
14.50 hrs.

रसायन और उर्वरक मंत्री तथा खाद्य और उपभोक्ता मामलों के मंत्री(सरदार सुरजीत सिंह बरनाला): अध्यक्ष महोदय, यह बहस कल से चल रही है। इस बहस में एक मुख्य बात

उधर से यह आई कि यह विस्फोट इस वक्त क्यों हुआ? यह हम से इसका जवाब मांग रहे हैं? मैं कल जिक्र कर रहा था कि हमारे पड़ोसी पाकिस्तान ने मिसाइल बनायी। वह १५०० किलोमीटर दूर तक मार करने वाली मिसाइल है।

उसका टॅस्ट हुआ। सारे पाकिस्तान में खुशी मनाई गई कि हमने मिसाइल बना ली है जो भारत के हरेक शहर पर गिरायी जा सकती है। वहां विरोध नहीं हुआ जैसे यहां कुछ विरोध करने की आदत है।

श्री शरद पवार (बारामती) : अग्नि का किसी ने विरोध नहीं किया।

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला : वहां उनकी क्षमता अगर न्यूक्लीयर बम बनाने की होती तो वह भी उन्होंने कर लिया होता क्योंकि आज ही उनके फौरॅन मिनिस्टर का बयान था कि हम किसी सैंक्शन की परवाह नहीं करते, हमें किसी सैंक्शन की परवाह नहीं है। यह बात ऐसे चली है कि शायद एक-दो या आठ-दस दिन में वे कोई ऐसे काम करने वाले हैं, इसलिए उन्होंने कहना शुरू किया है कि हमें किसी की परवाह नहीं है। सैंक्शन पहले भी लगते रहे हैं, आगे भी लगते रहेंगे, लेकिन हम किसी की परवाह नहीं करते। यह सिचुएशन है।

अब हमारी क्या सिचुएशन है? हम १९७४ में एक विस्फोट करके, तब से इसी तैयारी में लगे हुए हैं और यह काम बंद नहीं हुआ। यह कांस्टैण्टली चलने वाला काम था। हमारे साइंटिस्ट जो इस बड़े काम में लगे हुए हैं, एक जनरेशन गुज़र गई है, २४ साल हो गए हैं और वे तो बेचारे बुड्ढे हो गए। हमारे जो टौप साइंटिस्ट हैं चाहे अबुल कलाम हों या चिदम्बरम् हों, वे तो अब रिटायर होने वाले हैं। इसलिए बहुत ज़रूरी है कि उनके होते-होते वह काम हो जाए जिस काम को वे कर सकते हैं। ... (व्यवधान)

हमारे पास एक शस्त्र तैयार था। बहुत दिनों से बात चली आ रही थी कि शस्त्र तैयार है लेकिन शस्त्र का इस्तेमाल नहीं कर सकते जब तक कि उसका टॅस्ट न कर लिया जाए। शस्त्र का परीक्षण करना ज़रूरी होता है। अब यही बात सालों से थी कि शस्त्र तो तैयार है लेकिन उसका परीक्षण नहीं हो रहा था, टॅस्ट नहीं हो रहा था। यह टॅस्ट क्यों नहीं हो रहा था -- शायद कोई दबाव था बाहर का, शायद बाहर के हालात से कुछ घबराते थे या किसी ऐसे रिऐक्शन से घबराते थे कि यह न हो जाए, वह न हो जाए। हम ऐसी सोच में पड़े हुए थे, नहीं तो यह काम बहुत पहते हो जाना चाहिए था और हो सकता था। हमारे साइंटिस्ट कर सकते थे, हमारे टॅकनीशियन कर सकते थे, उनकी कैपेबिलिटी थी, हमारे देश की थी और बहुत पहले कर सकते थे, लेकिन गालेबन ऐसा

दिखाई दे रहा है, वही दबाव हमारे ऊपर था। हम नहीं कर पा रहे थे और अब जब कर लिया है तो उस पर ऐतराज़ हो रहा है कि अब क्यों कर लिया है? आप जो काम नहीं कर सके, उस पर ऐतराज़ नहीं करना चाहिए। आप कर लेते तो बहुत अच्छा था। उसका कोई विरोध भी नहीं होना था, लेकिन अब जो हो गया है, उसका विरोध हमें कोई न कोई बात निकालकर, नहीं करना चाहिए।

यह भी कहा गया कि लोग इसके बारे में अलग-अलग तरह की बात करते हैं। इसका बाहर के देशों में बहुत बुरा असर हुआ है। मुझे मौका मिला उस एरिया में जाने का जो बिल्कुल हमारे पड़ोसी देश के साथ लगता है। तरण-तारण में इलॅक्शन होने वाला है और ३ तारीख को वोट पड़ने वाले हैं। पिछले हफ्ते मैं वहां गया चुनाव प्रचार के लिए और मुझे कुछ लोगों से मिलने का मौका मिला। मैंने उनसे बातचीत की। मीटिंग्ज़ और गैदरिंग्ज़ में इस तरह की बातें भी चल पड़ती हैं। मुझे बात-बात में कहा गया कि हमारे यहां एक कहावत चलती है कि --

'सब दुनिया जाने ज़ोरां नूं, कौन पुच्छे कमज़ोरां नूं।'

This was the reaction of the people.

जो दूसरे लोग हैं वे जोर को समझते हैं, ताकत को समझते हैं। कमजोर आदमी की कोई पूछ नहीं है, उसकी कोई बात नहीं होती है। केवल यही बात नहीं है, हिस्टोरिकल बात है। मैं किसी और जगह पर गया था। वहां पर मेरे से पहले कोई बोल रहे थे। उन्होंने वहां पर ऐसी पुरानी बात की। ऐतिहासिक बात को सामने लाकर उन्होंने गुरू गोविंद सिंह जी का जिक्र किया। ऐसा समय आ गया है गुरू गोविंद सिंह जी ने तब फारसी में कहा -

चू कार अज़ हमी हिलाते दर गुज़श्त,

हलालुस्त बुरदन ब शमशीर दस्त।

जो काम और किसी ढंग से न हो सके फिर जरूरी है कि तलवार पर हाथ ले आइये। अब ऐसा हुआ। हालात ऐसे बन गये। आस-पास बैठे जो दूसरे लोग हैं वे परीक्षण किये जा रहे हैं, कोई किसी को रोक न सका। जिन लोगों के पास यह अणुशक्ति थी, वे किसी के रोके नहीं रूके, अपनी अणुशक्ति बढ़ाते रहे हैं। एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा परीक्षण किये जा रहे हैं है, किसी ने कुछ नहीं कहा। हम इसके बाद कोई टैस्ट नहीं करें। हमें यह कहा जा रहा है कि आपने क्यों टैस्ट कर लिया, यह टैस्ट करने का समय नहीं था, आपको अभी टैस्ट नहीं करना चाहिए थी। हमारी यह ख्वाहिश नहीं है कि हमारा पड़ोसियों से झगड़ा हो। उन्होंने भले ही हमें १०-१२ साल एक प्रोक्सी वार के जरिये से पंजाब में तंग किया है। मैं इस वक्त शिरोमणि अकाली दल के रिप्रजेन्टेटिव की हैसियत से बोल रहा हूं। १०-१२ साल लगातार एक प्रोक्सी वार चलता रहा है, जिसको उधर से सपोर्ट मिलती थी और हमारे देश का तथा खासकर पंजाब का नुकसान होता था। दोनों तरफ के करीब डेढ़ लाख मारे गये, कोई पाकिस्तानी, कोई आतंकवादी कुछ दूसरे साधारण लोग मारे गये। इतना भारी नुकसान हुआ है। पंजाब १०-१२ साल पीछे चला गया, ऐसे हालात हमारे बने रहे। हम उस वक्त भी उस बात के हामी थे। बहुत अरसा पहले १९७३ में शिरोमणि अकाली दल ने आनन्दपुर साहब रिजोल्यूशन किया था, उसमें पहली बात यह कही गई थी कि सारे पड़ौसी देशों से दोस्ताना ताल्लुकात होने चाहिए। यह हम अब भी कहते हैं और प्राइम मिनिस्टर साहब ने भी अपने स्टेटमैंट के पैरा दस में इस बात का जिक्र किया है -

We do not intend to use these weapons for aggression or for mounting threats against any country, these are weapons of self-defence, to ensure that India is not subjected to nuclear threats or coercion. We do not intend to engage in an arms race.

बहुत साफ कहा है, किसी को डराने, धमकाने की बात नहीं है। यह पूज्य गुरूओं ने भी कहा था। गुरू तेग बहादुर, जिनका शीश यहां दिल्ली में लगा, जिनकी शहादत हुई, उन्होंने भी कहा था - न भय काहू को देत हैं, न भय मानत आन। किसी को डर देते नहीं, लेकिन किसी का डर मानते भी नहीं हैं। यह उन्होंने कहा था और ऐसे ही नेशनल एजेंडा में इस बात को लिया गया है कि भयरहित सोसायटी बनानी है, भयमुक्त सोसायटी बनानी है। ऐसा कुछ कहा गया है। फिर जिक्र आया कि यह जो हमने किया है इससे आर्मस रेस हो जायेगी। इसकी वजह से हमारे साउथ ईस्ट एशिया में आर्मस रेस शुरू हो जायेगी। मैं यही कहना चाहता हूं कि आर्मस रेस तो चल रही है। यह रेस तो बंद नहीं हुई। चाइना तो बहुत समय से इस काम में लगा हुआ है। पाकिस्तान जो कर सकता था वह किये जा रहा है। एशिया में कुछ और देश भी हैं जो इस काम में लगे हुए हैं। आर्मस रेस चल रही है। इसलिए यह कहना कि अब इससे चलनी शुरू हो जायेगी, क्योंकि हमने यह काम शुरू कर दिया है, ऐसी कोई बात नहीं है। बल्कि ऐसा जरूर लगता है कि हम इसमें पिछड़ रहे थे। अगर ऐसा नहीं करते तो और पिछड़ जाते। कुछ लोग हमसे आगे निकल गये होते, हमें ऐसा दिखाई देता है। यहां पर जिक्र आया कि न्यूक्लियर वीपन्स का कभी इस्तेमाल नहीं हुआ है। यह आर्गुमेंट गुप्ता जी ने यहां पर किया। न्यूक्लियर वीपन्स तो बनते रहे हैं, लेकिन महज दो दफा ही जापान पर इस्तेमान हो सके, इसके बाद इनका कभी इस्तेमाल नहीं हुआ। मैं इस बात को मानता हूं।

15.00 hrs.

अध्यक्ष महोदय, यह हमला हुआ भी नहीं है, होगा भी नहीं तथा होना भी नहीं चाहिए, लेकिन इसकी वजह से किसी ने न्यूक्लीयर वैपन की तैयारी बन्द नहीं की। रूस और अमरीका का आपस में मुकाबला चल रहा था। अमरीका समझता था कि मैं ज्यादा बनाऊं और रूस समझता था कि मैं ज्यादा वैपन बनाऊं। उनके मुकाबले में अन्य देशों ने भी बनाना शुरू कर दिया।

यहां यह बात आई कि ऐसी क्या प्रोवोकेशन हो गई जिसके कारण आपने पोखरन में विस्फोट किया, इसकी क्या वजह थी, इसके लिए कोई न कोई ऐसी वजह चाहिए। प्रधान मंत्री महोदय ने कल जो बयान इस सदन में दिया है, उसमें इस बारे में बताया है कि यह परीक्षण क्यों किया गया। मैंने इतिहास में देखा है कि जिस देश ने भी परमाणु हथियार बनाए हैं, उसके लिए कोई प्रोवोकेशन की जरूरत नहीं पड़ी। सबसे पहले अमरीका ने जापान के दो शहरों पर एटम बम गिराए। फिर रूस ने भी एटम बम बना लिया। चायना ने भी बना लिया। चीन को किसी से कोई डर नहीं था, कोई प्रोवोकेशन नहीं था। इंग्लैंड ने बनाया था जिसको सैकिंड रेट पावर कहा जाता है और जो सैकिंड रेट पावर बन गया है। उसको किसी से कोई डर नहीं था। पिछली जंग तक तो डर था, लेकिन उसके बाद उसे कोई डर नहीं। पिछली जंग के बाद वह एक आर्गेनाइज्ड ढांचा बन गया था, लेकिन उसको न बाहर से और न कोई आंतरिक डर था, लेकिन वह भी न्यूक्लीयर रेस में शामिल हो गया। फ्रांस को कहीं से कोई प्रोवोकेशन नहीं था, किसी से कोई डर नहीं था, लेकिन फ्रांस ने भी परमाणु बम के दो-तीन धमाके किए। यह ऐसा काम है जिसमें किसी के प्रोवोकेशन की जरूरत नहीं है। यह आपके हाथ में है, आपका अपना हथियार है, आपने बना लिया, आप उसे टैस्ट करना चाहते हैं, तो इसमें किसी प्रो वोकेशन की कोई जरूरत नहीं है। आखिर यह आपकी अपनी सिक्योरिटी के लिए है। आप उसकी जांच करने के लिए परीक्षण कर रहे हैं। ऐसा आज नहीं हो रहा है। हमारे देश में यह कार्य पं.जवाहर लाल नेहरू के जमाने से होता चला आ रहा है। इसे हम अपनी सिक्योरिटी के लिए कर रहे हैं। इस परीक्षण में किसी प्रो वोकेशन की जरूरत नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, इस परीक्षण के बाद, यह नहीं सोचा जाना चाहिए कि हमारे बारे में कोई सात समंदर पार बैठा क्या कहेगा या फलां देश क्या कहेगा। इस बारे में हमें सोचने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हमारे प्रधान मंत्री ने अपने बयान में स्पष्ट किया है कि हम पहल नहीं करेंगे। इस बात को प्रधान मंत्री ने खुले तौर पर कह दिया है कि हम इसमें पहल करने वाले नहीं हैं। इस बात का सभी जगह स्वागत किया गया है। ऐसा नहीं है कि परमाणु परीक्षण से हमारे प्रति वर्लड ओपीनियन बिगड़ जाएगा। मैं पूछता हूं कि वर्लड ओपीनीयन हमारे पक्ष में कब था। १९७१ में हमारे न चाहते हुए भी बंगला देश के साथ वार हुआ था। हमारे साथ सारा देश खड़ा हो गया था। किसी भी पार्टी ने यह नहीं कहा कि यह ठीक नहीं है। अपोजीशन ने भी यह नहीं कहा। मुझे ध्यान है, पार्लियामेंट में भी जो तकरीरें हुईं उनमें किसी ने यह नहीं कहा कि आपने यह नाजायज काम किया है और इससे वर्लड ओपीनियन बिगड़ जाएगा। यहां तक हुआ कि अमरीका ने अपना सातवां बेड़ा बंगाल की खाड़ी में भेज दिया। सारे देश में इस बात की चर्चा चली कि अमरीकी फोर्सेस आ रही हैं और शायद लड़ाई में दखल करेंगी, लेकिन उसकी वजह से देश डरा नहीं, बल्कि एकजुट हो गया और एक आवाज में सारा देश बोला और एक साथ खड़ा हो गया।

15.04 hrs. (Shri Rahuvansh Prasad Singh, in the Chair)

सभापति महोदय, सारा देश इंदिरा जी के साथ खड़ा हो गया। किसी ने यह नहीं कहा कि यह अच्छा नहीं हुआ, हमें पड़ौसी पर आक्रमण नहीं करना चाहिए, हमारे संबंध पड़ौसी के साथ अच्छे होने चाहिए, ऐसा नहीं होना चाहिए। अपने पड़ौसियों के साथ अच्छे ताल्लुकात रखने चाहिए। ऐसी बातें किसी ने नहीं कहीं, लेकिन मुझे आज ताज्जुब हो रहा है कि जो परमाणु परीक्षण किया गया है, जो देश के लिए एक बहुत बड़ा कार्य है, इससे देश को बहुत फायदा होने वाला है और हुआ भी है। हमारे देश का सम्मान दुनिया में परमाणु शक्ति के रूप में हुआ है। फिर महज इस बात से घबाराना कि विदेशी लोग हमारे बारे में क्या कहेंगे या दुनियां में ज्यादातर जो मुस्लिम कंट्री हैं, वे हमारे बारे में क्या सोचेंगे।

किसी के स्टेटमैंट का जिक्र करते हुए कहा कि उनका क्या बनेगा? इतने करोड़ लोग हैं, वे नाराज हो जायेंगे। ऐसा इज़राइल के साथ भी हुआ था। इज़राइल बहुत छोटा सा देश है जो चारों तरफ से घिरा हुआ है। लेकिन जहां तक उसके देश की सिक्योरिटी का ताल्लुक है, उसने किसी की तरफ ध्यान नहीं दिया। उसने नहीं सोचा कि दूसरे लोग क्या कहेंगे? वे ९-१० करोड़ लोग जो उसके इर्द-गिर्द बैठे हुए हैं, क्या कहेंगे? वह अपने हिसाब से चलता रहा। इसलिए मैं यही कहना चाहूंगा कि देश की सिक्योरिटी के लिए हमें इस बात का ध्यान न रखते हुए कि दुनिया क्या कहती है, दुनिया क्या कहेगी, अपनी मजबूती का ख्याल रखना चाहिए और देखना चाहिए कि हमारा देश कैसे मजबूत हो सकता है।

यहां पर फिर सैंक्शन का जिक्र आया कि सैंक्शन लग जायेंगे। तादाद गिनी जाने लगी कि साहब इतना पैसा नहीं आयेगा, कुछ बिलियन डालर की बात यहां पर कही गयी। सैक्शन के बारे में मैं अभी गुजारिश करके हटा हूं कि पाकिस्तान के लोग, वहां के फॉरन मिनिस्टर कह रहे थे कि हमें सैंक्शन की परवाह नहीं है। सैंक्शन की परवाह बहुत लोगों ने नहीं की। सैंक्शन बहुत लोगों पर लगे हैं। सैंक्शन की बात पहली दफा नहीं हो रही है। सबसे पहले क्यूबा पर सैंक्शन लगे थे लेकिन फिडल कास्ट्रो ने उनकी परवाह नहीं की। उसे ३० साल के करीब हो गये हैं लेकिन वह चला आ रहा है। उनकी इकनोमी बहुत अच्छी नहीं है, इसे मैं मानता हूं लेकिन वे इस बात से नहीं घबराए। उनका मनोबल कायम है। उनको अपनी आजादी पर गर्व है, अपनी शक्ति पर गर्व है।

अभी कुछ अर्सा पहले इराक के खिलाफ सैंक्शन लगे थे। दुनिया भर के सैंक्शन इराक के खिलाफ लग गये। एक दफा तो घबराहट हुई कि अब क्या होगा? ऐसा स्थिति आ गयी कि न उनके पास खाने को कुछ सामान और न बच्चों के लिए दवाइयां। बच्चे मरने लगे लेकिन वहां आहिस्ते-आहिस्ते सैंक्शन की बात खत्म हो गयी। लोग इस बात को सह जाते हैं और वहां के लोग भी सह गये। ख्याल यह था कि इतने बड़े सैंक्शन लग गये तो शायद श्री सद्दाम हुसैन के खिलाफ कोई बगावत हो जाये लेकिन नहीं हुई। वहां के हालात बड़े मुश्किल में हैं। उनकी इकोनोमी बहुत अच्छी नहीं है, वह बिखर गयी है लेकिन श्री सद्दाम हुसैन हीरो बने हुए हैं, इसी वजह से बने हुए हैं। सारे सैंक्शन का मुकाबला करके वह खड़ा हुआ है। अपने देश के लिए खड़ा है, देश के गौरव के लिए खड़ा हुआ है। यह बहुत बड़ी बात होती है। इसलिए मैं यह कहना चाहूंगा कि सैंक्शन की बात कोई नई बात नहीं है।

सैंक्शन की बात पर मैं आपको इतिहास की घटना बताता हूं। उस समय मुगलिया सल्तनत चलती थी और लाहौर में उनका राज था। उस समय सिख थोड़ी तादाद में हुआ करते थे लेकिन वे थोड़ा-थोड़ा सिर उठाते थे। लाहौर के नवाब मनु ने फैसला कर दिया कि हर सिख के सिर की कीमत दी जायेगी। उसके सिर की कीमत ८० रुपये मुहैया हो गयी कि जो कोई भी सिख का सिर काटकर लायेगा उसे ८० रुपये मिलेंगे। सिख के खिलाफ इससे बड़ा और क्या सैंक्शन हो सकता है? कहीं भी सिख देखो, उसका सिर काटकर ले आओ और ८० रुपये ले जाओ। लोगों ने बहुत से सिखों के सिर ले जाकर पैसे लिये लेकिन वह सैंक्शन कामयाब नहीं हुआ। वह सैंक्शन फेल हो गया, हार गया और यहां तक हो गया कि जो दिलेर लोग होते हैं, मैं आपको इतिहास का एक और किस्सा सुनाता हूं। यह किस्सा तरनतारन इलाके का ही है। जब यह ढोल पिटवाया गया कि पंजाब से सिख खत्म हो गये, उनको मार मुकाया तो वहां एक गांव में दो आदमी थे और वे उस परिवार से थे जो दलित परिवार होते हैं। उन्होंने जब यह बात सुनी कि सिख खत्म हो गये तो वह कहने लगे कि खोता सिंह त्यूं जिंदा हैं, मैं जिंदा हूं ते सिख किथे खत्म हो गये। वे दोनों खड़े हो गये। खोता सिंह और उसका साथी दोनों खड़े होकर पुल पर चले गये। वह वही पुल था जिसकी सड़क लाहौर से दिल्ली आती है और जिसको जी.टी. रोड कहते हैं। उस पर वे लट्ठ लेकर खड़े हो गये कि जो कोई भी यहां से गुजरेगा, वह हमें टैक्स देकर जायेगा।

श्राधे पर एक आना टैक्स लगा दिया, बैलगाड़ी जाएगी तो दो आने देकर जाएगी। कार्य शुरु हो गया। लोग कहने लगे कि यह कहां से शुरु हो गया। उन्होंने कहा कि यह सिखों का टैक्स है, हमने शुरु कर दिया है। वे कहने लगे, हमने तो सुना है कि सिख खत्म हो गए हैं। उन्होंने कहा कि इसलिए हमने टैक्स लगाया है। लाहौर में पता लगा कि यहां तो टैक्स वसूल किया जा रहा है, आप कहते हैं कि सिख खत्म हो गए हैं। फौज भेजी गई। दोनों लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। आज वहां पर उनका शहीदगंज बना हुआ है। मैं अर्ज कर रहा था कि सैंक्शन्स लगते हैं, सैंक्शन्स से नहीं घबराना चाहिए। देश के गौरव के लिए यह आनी-जानी बात है। इससे घबराकर अपने फैसले नहीं बदलने चाहिए। सैंक्शन्स की बात तो ११ तारीख को चली थी। जगह-जगह से धमकियां आने लगीं कि यह सैंक्शन लगेगा, वह सैंक्शन लगेगा। लेकिन उसके बाद क्या हुआ। सरकार ने क्या फैसला किया और सरकार का क्या रवैया रहा, सरकार उस सैंक्शन से घबराई या नहीं। एक बात बहुत बढ़िया की कि उसी जगह पर फिर दो टैस्ट किए गए और उसने यह साफ कर दिया कि हमें आपके सैंक्शन्स की परवाह नहीं है, हम देश के गौरव के सिए कुछ भी कर सकते हैं, हमने किया है और आज फिर करते हैं। मैं समझता हूं कि इसके लिए वाजपेयी जी को बहुत बधाई देनी चाहिए क्योंकि यह फैसला उनका था।

एक बात यह कहना चाहूंगा कि इसे कुछ और शक्ल दी जा रही है। मैं इसका जिक्र अखबार में पढ़ रहा था कि किसी ने इसे हिन्दू बम कह दिया। जो मेरे खिलाफ इलैक्शन लड़ रहे थे, उन्होंने कह दिया कि यह हिन्दू बम है। वे पार्लियामैंट के मैम्बर बनकर आए थे लेकिन दरवाजे से ही लौट गए, अंदर दाखिल नहीं हुए थे। उन्होंने अब कह दिया कि यह हिन्दुओं ने बनाया है, यह हिन्दू बम है।

... (व्यवधान)

मैं यह कहना चाहता हूं कि इस बात को यह शक्ल न दी जाए। इधर से इस बात का जिक्र हुआ कि कोई वहां पर मंदिर बनाने की सोच रहा है। मैं इसका विरोधी हूं। उस जगह पर मंदिर नहीं बनना चाहिए, वह टैस्ट की जगह है, टैस्टिंग रेंज है।

... (व्यवधान)

एक देश में नहीं, बहुत से देशों में विस्फोट हुए हैं लेकिन वहां पर कोई मंदिर या ऐतिहासिक जगह नहीं बनाई गई, वहां पर कोई मैमोरियल कायम नहीं किया गया। इसे इस नजरिए से नहीं लेना चाहिए। यदि कहना है तो इसे सैकुलर बम कहना चाहिए। यह देश का बम है, यह हमारे हिन्दुस्तान का बम है, इस पर सभी देश वासियों को गर्व होना चाहिए कि यह हमारा है, जो कुछ किया है, हमने किया है। यह हमारे टैक्नीशियन्स की, साईंटिस्टस की बदौलत हुआ है।

अंत में एक बार फिर सारे सदन से इस बात की प्रार्थना जरूर करूंगा कि यह ऐसा मौका है जिसपर हम सबको एक होकर खड़े होना चाहिए, भले ही हमें कोई बात पसंद न आई हो। यह कहना कि हमसे सलाह नहीं की, मशविरा नहीं किया, ऐसी बोतों में मशविरा नहीं होता, पहले भी कभी नहीं हुआ। १९७४ में भी नहीं किया गया। बंगलादेश के साथ लड़ाई लगी थी, किसी से नहीं पूछा गया। जब भी कोई ऐसी बात होती है तो उसमें सीक्रेसी होती है। सबसे अजीब बात यह हुई कि अमरीका को पता नहीं लगा कि ये क्या कर रहे हैं। सारी दुनिया में लोगों को हैरानी हुई कि यह कैसे हो गया, इसकी खबर किसी को नहीं हुई, नहीं तो कोई न कोई यह अंदाजा लगाता कि ये हफ्ते, दस दिन में कुछ करने वाले हैं। यह भी बहुत बड़ी बात है। मैं समझता हूं कि इसे सारे हाउस को इस ढंग से लेना चाहिए कि यह देश के लिए ठीक बात हुई है और इससे देस का गौरव बढ़ा है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

">

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल): सभापति महोदय, कल से चर्चा चल रही है और न्यूक्लियर पर यह गम्भीर चर्चा है। हम समझते हैं कि सारा सदन इसे गम्भीरता से ले रहा है।

जहां तक पोखरण के परीक्षण का सवाल है, इसके लिए हिन्दुस्तान के वैज्ञानिक और रक्षा विशेषज्ञ या इंजीनियर्स और जितने भी उनके सहयोगी हैं, वे बधाई के पात्र हैं। उन्होंने सारे विश्व में साबित कर दिया कि हमारे भारत के वैज्ञानिक किसी से पीछे नहीं हैं और इन परीक्षणों में या परीक्षण में, चाहे ११ मई का परीक्षण हो या १३ मई के हों, जो अभी सत्ता पक्ष की तरफ से मंत्री जी या जो भी नेता बोले हैं, उनको भारी एतराज है कि विपक्ष के लोग जो सच्चाई सारे देश के सामने, सारे विश्व के सामने रख रहे हैं और यह सच्चाई है कि इस परीक्षण के सम्बन्ध में या देश की सुरक्षा के सवाल को लेकर सब एक है। देश की रक्षा सर्वोपरि है। हमारे देश की सर्वोच्च प्राथमिकता देश की सुरक्षा है, इसमें कहीं किसी का मतभेद नहीं है और हम बताना चाहते है कि मतभेद क्यों है । कहा जा रहा है कि प्र धानमंत्री बडे बहादुर बडे साहसी है और देश को महान शाक्ति बना दिया है । हम आपके साथ तैयार है । चीन के कब्जे में जो भारत की जमीन है, उसे मुक्त करने के लिए वहां चलना है । क्या आप चलने के लिए तैयार है। लेकिन इस सच्चाई को स्वीकार करना पड़ेगा कि तीन कारणों से यह परीक्षण इस वक्त हुआ है। पहला कारण, जो हम नहीं, माननीय प्रधान मंत्री जी के खासमखास एक मिनिस्टर साहब हैं, ११ मई और १३ मई को परीक्षण हुआ है और ये सण्डे मैगजीन है, १९ अप्रैल से २५ अप्रैल की, उसमें उ० प्र० के एक मिनिस्टर साहब कहते हैं कि हमने प्रधान मंत्री जी से, अटल जी से कहा है कि अब एटम बम फोड़ दीजिए, हर देश चीन, अमेरिका, रूस चीखते-चीखते रह जाएंगे और जयललिता और स्वामी की कोई नहीं सुनेगा।

एक माननीय सदस्य : कौन मंत्री हैं?

श्री मुलायम सिंह यादव : मैं मंत्री जी का नाम नाम नहीं लेना चाहता, लेकिन प्रधान मंत्री जी के खासमखास हैं। एवं प्रदानमंत्री के चुनाव इंचार्ज थे अगर प्रधान मंत्री जी इजाजत दें तो हम बता देंगे।

... (व्यवधान)

डा. शकील अहमद : प्रधान मंत्री जी क्या, आप बताइये न, क्या नाम है?

श्री मुलायम सिंह यादव : यदि भाजपा के मित्र जानना चाहते है , तो में बता देता हूं कि वह है लाल जी टंडन, उत्तर प्रदेश में मंत्री हैं।

श्री राजवीर सिंह (आंवला) : सभापति जी, पाइंट ऑफ आर्डर। जो व्यक्ति इस सदन का सदस्य नहीं है, जो इस बात का जवाब नहीं दे सकता है, क्या उसका नाम लेकर कुछ कोट करना उचित है? वे उसका जवाब तो नहीं दे पाएंगे।

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूडी, एवीएसएम (गढ़वाल) : आप इसको ओथेंटिकेट करके सभा पटल पर रखिये या फिर आप इसको रिकार्ड से निकालिये।

सभापति महोदय : कृपया आसन ग्रहण कीजिए।

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूडी, एवीएसएम : नहीं तो आप इसको सभा पटल पर रखिये।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : शान्ति-शान्ति। कृपा करके आसन ग्रहण कीजिए। मैंने इजाजत नहीं दी।

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूडी, एवीएसएम : आपने जो अखबार से पढ़ा है, क्या इसको सभा पटल पर रखेंगे?

सभापति महोदय : माननीय सदस्य के भाषण के बीच में टोका-टाकी उचित नहीं है।

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूडी, एवीएसएम : सभापति जी, यह सभा पटल पर ओथेण्टिकेट करके रखें या इसको रिकार्ड से निकाल दिया जाये।

... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : और आगे क्या कहा है? आगे कहा है कि अगर बम नहीं है तो पटाखा चला दीजिए।

... (व्यवधान)

श्री विजय गोयल (चांदनी चौक): पटाखा क्या होता है?

श्री मुलायम सिंह यादव : वह नहीं जानते, जो होली और दिवाली पर चलाया जाता है। हम और आप सब जानते हैं कि पटाखा क्या है।

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूडी, एवीएसएम : सभापति महोदय, क्या अखबार से पढ़कर हम यहां पर भाषण दे सकते हैं, कृपया इस पर अपनी रूलिंग दीजिए या इसे ये ओथेंटिकेट करके सदन में रखें।

श्री दिग्विजय सिंह (बांका): छपा हुआ है, पढ़ने दीजिए।

श्री मुलायम सिंह यादव : बम नहीं है तो पटाखा ही चला दीजिए, किसे पता चलेगा कि यह बम है या पटाखा है।

SHRI RAJESH PILOT : He has quoted the Sunday magazine. He is only quoting a magazine.

MAJOR GENERAL BHUVAN CHANDRA KHANDURI, AVSM : It has been ruled here.

SHRI RAJESH PILOT : The Sunday magazine is a known magazine. He mentioned the Sunday magazine and he is quoting it.

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूडी, एवीएसएम : दसवीं लोक सभा में जब शिवराज जी पाटिल अध्यक्ष थे तो उन्होंने कहा था कि अखबारों से या मैगजीनों से कोट नहीं कर सकते।

सभापति महोदय : माननीय सदस्य खंडूरी जी, कृपया आसन ग्रहण करें।

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूडी, एवीएसएम : आप अपनी रूलिंग दे दें।

सभापति महोदय: कौन से नियम के अंतर्गत दूं?

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूडी, एवीएसएम : आप अपनी रूलिंग दे दें तो हम मान लेंगे कि अखबारों से या पत्रिकाओं से यहां कोट कर सकते हैं।

सभापति महोदय: ठीक है, अब आप बैठ जाएं।

श्री मुलायम सिंह यादव : दूसरा कारण अभी परीक्षण करने का यह है..

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूडी, एवीएसएम : आप रूलिंग दे दें, फिर हम भी कोट करेंगे।

... (व्यवधान)

मैं कानून की, रूल की बात कर रहा हूं।

श्री दिग्विजय सिंह : स्पीकर साहब ने कहा है पढ़िए। ठसंडे' मैगजीन ओथेंटिकेट है।

सभापति महोदयः माननीय सदस्य खंडूरी जी, आपको जब मौका मिलेगा तब आप जोरदार ढंग से अपनी बात कह देना।

श्री मुलायम सिंह यादव : दूसरा कारण यह है कि अभी बजट आने वाला है और बजट से गरीब इनसान पर और सारे नागरिकों पर भारी आर्थिक बोझ पड़ने वाला है।

एक माननीय सदस्यः आपको पहले से ही मालूम हो गया।

श्री मुलायम सिंह यादव : हां, मुझे मालूम है। इसलिए इस बोझ को सहने के लिए ये परीक्षण का सहारा ले रहे हैं। तीसरा कारण है राजनीतिक लाभ उठाना। अगर ये तीन बातें नहीं होतीं तो हम लोग चर्चा नहीं करते। जैसा मैंने शुरू में कहा कि रक्षा के मामले में हमारा कोई मतभेद नहीं है। देश शक्तिशाली बने। हमारे देश को कोई बुरी दृष्टि से देख नहीं सके, इससे हम सब सहमत हैं। लेकिन जिस ढंग से परीक्षण किए गए, उस पर हमारा विरोध है।

आपने अपने राष्ट्रीय एजेंडा में कहा है कि हम नेशनल सिक्योरिटी कौंसिल का गठन करेंगे। उसीमें परमाणु शक्ति के बारे में रिव्यू करेंगे। और देश की रक्षा के बारे में सारी की सारी योजनाएं और जो कुछ है, उसके अनुसार करेंगे। लेकिन अभी तक नेशनल सिक्योरिटी कौंसिल का गठन नहीं हुआ और न ही कोई रिव्यू किया गया। इससे आशंकाएं अपने आप उत्पन्न हो रही हैं।

दूसरी बात, यह जो परीक्षण हुआ है, यह सारा देश स्वीकार करता है कि यह नया नहीं हुआ है। १९७४ में हो चुका है और जो भी तर्क दिए जा रहे हैं कि पुराने हो गए हैं या नए हो गए हैं। अभी तक विश्व के अंदर २४०० से ज्यादा परमाणु शक्ति के परीक्षण हो चुके हैं लेकिन अभी तक एक भी असफल नहीं हुआ है। जब एक भी परीक्षण असफल नहीं हुआ है, मैं नाम लेकर आपका समय बर्बाद करना नहीं चाहता, लेकिन जब अभी तक एक भी परीक्षण विश्व में असफल नहीं हुआ है तो परीक्षण असफल होने का सवाल ही नहीं था। लेकिन आम सहमति का संकट था। आम सहमति इस सरकार के मंत्रियों में नहीं। आम सहमति सरकार चलाने वाले जितने घटक हैं, उनमें नहीं है और आम सहमति का उपदेश देते हैं। बरनाला साहब व प्रधानमंत्री जी पहले अपने मंत्रियों में आम सहमति कर लीजिए। आपकी संस्कृति आम सहमति की नही है, बल्कि टकराव की है।

... (व्यवधान)

SHRI TAPAN SIKDAR (DUMDUM): You please go through our Agenda.

श्री मुलायम सिंह यादव : अब जब विश्व में किसी को आशंका नहीं थी कि भारत के पास परमाणु शक्ति नहीं है, किसी भी देश को, किसी भी मुल्क को, कोई िवस्मय, दुविधा या आशंका नहीं थी कि भारत के पास परमाणु शक्ति नहीं है क्योंकि १९७४ में ही पता चल गया था कि भारत के पास है। इसमें यह छपा भी है। हम रक्षा संवंधी गोपनीयता को भंग करना नहीं चाहते। हम भी जानते हैं कि किसके पास कितने हैं। इसमें साफ लिखा हुआ है कि हमारे पास बीस से पैंसठ हैं। पाकिस्तान के पास पन्द्रह से लेकर बीस हैं और चीन के पास ४५० हैं। यह सारा विश्व जानता है। बरनाला साहब, आप गलतफहमी में न रहें कि पाकिस्तान के पास कुछ नहीं हैं।

... (व्यवधान)

हम गोपनीयता को भंग करना नहीं चाहते। जब हम सत्ता से हटे, उस समय की वस्तुस्थिति से हम अवगत है प्रधान मंत्री जी हमारे देश की सारी की सारी डिवाइस को, हमारी ताकत को सारी दुनिया के सामने बयान देकर खोल रहे हैं, यह अच्छी बात नहीं है।

ये परीक्षण तीन राजनैतिक कारणो से किए गए है। मैंने तो बता दिया है कि अपनी सरकार बचाने के लिए किया गया है। राजनीतिक कारण से ही इसे 'गौरव दिवस' कहा गया। गौरव, दिवस समारोह सबको पता है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के लोग, भारतीय जनता पार्टी के नेतागण सम्मिलित हुये और उनकी पार्टी के अलावा इस सरकार में घटक शामिल हैं, उनका एक भी नेता, एक भी कार्यकर्ता, कोई भी नहीं गया और न बुलाया गया। रात के आठ बजे से लेकर आतिशबाजी होती रही और लड्डू बांटे, पेड़े बांटे,

... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्यः आप भी खा लेते।

श्री मुलायम सिंह यादव : हम आपका बहुत सोच समझकर खाएंगे।

... (व्यवधान)

जब १९७४ में ही पता ही हो गया था कि भारत के पास परमाणु शक्ति हैं। ऐसा लग रहा है कि यह एटम बम नागपुर में बना है और बाकायदा तीन जेबों में प्रधान मंत्री जी लेकर आए और पोखरण में जाकर बटन दबा दिया। क्या यह देश के सामने मजाक नहीं है? लखनऊ से लेकर पूरे उत्तर प्रदेश और बिहार से लेकर पूरे हिन्दुस्तान में इस प्रकार का दुष्टचार किया गया है।

पूरी तरह त्रचारित किया गया है यह कार्य केवल भारतीय जनता पार्टी ने किया है, समता पार्टी ने भी नहीं किया है। रक्षा मंत्री का भी कोई योगदान नहीं है। सच्चाई यह है कि आपने दल को सर्वोपरि माना है, देश की सुरक्षा को नही । ठीक है,आप कहते है कि आपने परीक्षण क्यों नही किया हम भी कर सकते थे परन्तु हमने राजनीतिक लाभ उठाने के लिए नहीं किया। यदि हिन्दुस्तान, परीक्षण की वजह से, ताकतवर हो गया है और देश एक महानशक्ति बन गया है, तो चीन को जवाब दो।

महोदय, हमारे गांव में एक कहावत है - 'आ बैल मुझे मार।' बरनाला जी भी जानते हैं, इसलिए मैं कह रहा हूं। मतलब - खुद झगड़ा मोल लेना। रक्षा मंत्री जी भी मेरी बात सुन रहे होंगे। रक्षा मंत्री जी ने जो रिपोर्टस दिखाई हैं, उनमें सच्चाई है कि सब पत्रावलियों में उल्लेखित है। इसमें कोई दिक्कत नहीं है, ग्रह मंत्री जी भी देख सकते हैं कि क्या-क्या लिखा है और क्या-क्या हमने अपने रक्षा मंत्री कार्यकाल में किया है। परीक्षण को यहां तक लाने के लिए जितना बजट संयुक्त मोर्चा सरकार ने दिया, उतना बजट कभी किसी सरकार ने नहीं दिया। परीक्षण को सफल बनाने में सबसे ज्यादा योगदान भारतीय वैज्ञानिकों का है। इसके अलावा परीक्षण को सफल बनाने, तथा इसके लिए धन उपलब्ध कराने में सबसे ज्यादा योगदान संयुक्त मोर्चे की सरकार का है। उस रिपोर्ट को रक्षा मंत्री जी देखेंगे, ग्रह मंत्री जी देखेंगे और वित्त मंत्री जी भी देखेंगे कि कितना पैसा उपलब्ध कराया गया । जो कुछ उपकरणों की कमी थी, उसको पूरा किया गया। ठीक है, अक्टूबर-नवम्बर के महीने में पोखरण में ऐसी स्थिति थी कि पूरा काम नहीं हो पाया। हम कहते हैं कि इसमें हमारा योगदान नहीं है, वैज्ञानिकों का योगदान है। नेहरु जी से लेकर इंदिरा जी तक सबका योगदान है, लेकिन इसमें भारतीय जनता पार्टी का रत्ती भर भी योगदान नहीं है। भारतीय जनता पार्टी या आपकी सरकार देश को गुमराह करने की कोशिश कर रही है।

... (व्यवधान)

पूरा देश सुन रहा है, आपका एवं आपकी सरकार रत्ती भर भी योगदान नहीं है। ... (व्यवधान) हम बड़ी मजबूती के साथ कहते हैं कि आपका रत्ती भर भी योगदान नहीं है। आप देश को बहुत दिनों तक मूर्ख नहीं बना सकते हैं।

जहां तक नुकसान और फायदे की बात है, उसको भी देख लीजिए। सदन में बहस चल रही है। हमारा देश गौतम का देश कहलाता है। हमारा देश गांधीजी का देश कहलाता है। हमारा देश गुट-निरपेक्ष देशों में सबसे अहम भूमिका निभाने वाला देश है। गैर-बराबरी लोगों के साथ संघर्ष करने वाला देश है और अहिंसा का संदेश देने वाला देश है। हम अपनी सुरक्षा पूरी रखेंगे, लेकिन जिस तरह से आप धमकाते हैं, वह ठीक नहीं है। जिस प्रकार एक मंत्री जी बोले, उसके क्या नतीजे होंगे। उन्होंने कहा पाकिस्तान, समय-जगह-दिन निश्चित कर ले, उसी दिन हम तैयार है चौथी लड़ाई लड़ने के लिए। इस तरह की बात कहना, क्या फूहड़पन नहीं है? दूसरे मंत्री जी कहते हैं - यह जो परीक्षण हुआ है, वह राष्ट्रीयता का परीक्षण हुआ है। मैं पूछता हूं, इसका क्या मतलब हुआ? इसका मतलब यह हुआ कि इनकी नीतियों को जो बेनकाब करे, वह देशद्रोह है और जो इनका समर्थन करें, वह देशभक्त है। अब हमें इनसे प्रमाण-पत्र लेंने होंगे! ... (व्यवधान) इन लोगों से कि हम लोग देशभक्त हैं

... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्यः यह राष्ट्रीयता है।

... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल): हमे पता है। ज्यादा न कहिए, हम बता देंगे कि आपकी राष्ट्रीयता कहां थी।

... (व्यवधान)

अंग्रेजों के साथ थे।

... (व्यवधान)

एक संयमी और देश के बड़े परिपक्व नेता माने जाते हैं, इसमें दो राय नहीं है, उनसे हमारे वैचारिक मतभेद हैं लेकिन फिर भी हम यह मानते हैं कि आडवाणी साहब एक गंभीर, परिपक्व देश के नेता हैं। उन्होंने भी कह दिया कि एटम बम आ गया, पाकिस्तान बाज आ जाओ। सन् १९७१ को याद करो। जब से एटम बम बना तो क्या उस दिन से गोलीबारी बंद हो गई, घुसपैठिए आने बंद हो गए?

... (व्यवधान)

हमने ही बंद किया, आपने कुछ नहीं किया।

... (व्यवधान)

और कहा पाक बाज आए, भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बन गया है- क्या वास्तव में बन गया है, क्या इसमें सच्चाई है? सारे वैज्ञानिक कह चुके हैं कि अभी हम बम बनाने लायक हो गए हैं लेकिन उसके और पहलू भी हैं- चलाने को, खिंचने को, फेंकने को, उसमें क्या प्रगति है, जरा आप बता दो? मैं प्रधान मंत्री जी से पूछना चाहता हूं।

... (व्यवधान)

इसके लिए वे तैयारी दे आए हैं। इसके लिए गोपनीयता भंग करना नहीं चाहते हैं। उसी के लिए पैसा देते आए हैं और कितना देकर आए हैं, करोड़ों नहीं बल्कि अरबों देकर आए हैं। इसलिए हमने कहा कि आप अभी नहीं बन पाए हैं।

महोदय, दूसरी बात यह है कि जो भारत थर्ड वर्लड स्थान रखता है ये आज उस पर आशंका है, अविश्वास है। सबसे ज्यादा अविश्वास किस को है कि आज रक्षा के मामले में जितनी भी रूस ने हमारी मदद की है, हर मौके पर की है तथा अब भी की है, १९८६-८७ से नेहरू जी के टाइम से लेकर अब तक लगातार की है- उसने पहले भी क्या रिएक्शन दिया था, हमको धोखेबाज कह दिया, रूस ने हमको धोखेबाज कहा कि मुझे धोखा दिया गया। हम भी रूस गए थे, उनकी क्या राय थीपरवाह मत करो, हम आज हिन्दुस्तान की रक्षा की जिम्मेदारी लेते हैं। सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत कर दो। हमने कहा कि सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत नहीं होंगे और आज भी कह रहे हैं कि सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत करने के लिए हम और हमारी पार्टी किसी भी कीमत पर तैयार नहीं हैं। जब तक दुनिया के अंदर गैर बराबरी हथियारों की है या सारी दुनिया के हथियार पूरे के पूरे समुद्र में फेंक नहीं दिए जाते हैं तब तक सी.टी.बी.टी. या एमओए पर दस्तखत करने का कोई स वाल ही नहीं होता और आज आप पीछे के रास्ते से सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत करने के लिए तैयार बैठे हैं। आप सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत करेंगे, आप देश को कहां ले जा रहे हैं? अगर सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत करने की बात भी आपने कही तो पूरा हिन्दुस्तान आपके खिलाफ खड़ा होगा, आपको कोई निकलने नहीं देगा। सी.टी.बी.टी. पर क्या गुप्त रूप से दस्तखत करने का आपका इरादा है। यह साफ है, स्पष्ट है कि परीक्षण के बाद इंदिरा जी ने कहीं भी प्रेस कांफ्रेंस नहीं की। उसका नतीजा यह हुआ कि दुनिया के अंदर कहीं भी तीव्र प्रतिक्रिया नहीं हुई, आज ऐसी प्रतिक्रिया क्यों हुई। केवल श्रेय लेने के लिए, राजनीतिक लाभ उठाने के लिए आपने प्रेस कांफरेंस की और कहा कि हमारे पास कितने वैपन्स हैं, उनकी डिवाइस को भी सारी दुनिया को बता दिया।

... (व्यवधान)

इससे ज्यादा सुरक्षा के लिए और क्या खतरा हो सकता है। प्रेस कांफ्रेंस करके प्रधानमंत्री जी ने सबसे बड़ा खतरा देश के सामने खड़ा किया और फिर उन्होंने क्या कहा कि हम बहुत बड़े बहादुर हैं और हम सब कायर निकले थे, फाइलों पर पड़े रहे। हमारे गुजराल साहब से लेकर, हम तो कोई बहादुर नहीं थे, ये बहादुर निकले और दूसरे ही दिन घुटने टेक करके अमेरिका को चिट्ठी लिख दी। चिट्ठी लिखने का मतलब है कि या तो घुटने टेके हैं या मिलिभगत है, दोनों में से एक बात है, इसका जवाब दें। अगर मिलिभगत नहीं है तो क्या है आप बताएं। अमेरिका नहीं चाहता है कि हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बंगलादेश की दोस्ती हो। हम चाहते हैं कि दोस्ती हो, क्योंकि अगर दोस्ती होगी तो जो सबसे ज्यादा शक्तिशाली मुल्क अगर कोई होगा तो वह हिन्दुस्तान होगा।

के दफ्तर, भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय और उनकी पार्टी के अलावा इसमें जितने घटक शामिल हैं, उनका एक भी नेता, एक भी कार्यकर्ता, कोई भी नहीं गया और न बुलाया गया। रात के आठ बजे से लेकर आतिशबाजी होती रही और लड्डू बांटे, पेड़े बांटे, ... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्यः आप भी खा लेते।

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल): हम आपका बहुत सोच समझकर खाएंगे।

... (व्यवधान)

जब १९७४ में पता ही हो गया था कि भारत के पास हैं। ऐसा लग रहा था कि यह एटम बम नागपुर में बना है और बाकायदा तीन जेबों में प्रधान मंत्री जी लेकर आए और पोखरण में जाकर बटन दबा दिये। क्या यह देश के सामने मजाक नहीं है? लखनऊ से लेकर पूरे उत्तर प्रदेश और बिहार से लेकर पूरे हिन्दुस्तान तक इस प्रकार का काम किया गया ।

पूरी चर्चा की कि भारतीय जनता पार्टी ने किया है, समता पार्टी ने भी नहीं किया है। रक्षा मंत्री का भी कोई योगदान नहीं है। सच्चाई यह है कि देश की रक्षा स र्वोपरि है, पार्टी की ताकत सर्वोपरि नहीं है। ठीक है, हमने नहीं किया। हमने राजनीतिक लाभ उठाने के लिए नहीं किया। हिन्दुस्तान, परीक्षण की वजह से, ताकत दिखाने से ताकतवर हो गया और देश एक महानशक्ति हो गया है, तो चीन को जवाब दो।

महोदय, हमारे गांव में एक कहावत है - 'आ बैल मुझे मार।' बरनाला जी भी जानते हैं, इसलिए मैं कह रहा हूं। मतलब - खुद झगड़ा मोल लेना। रक्षा मंत्री जी भी मेरी बात सुन रहे होंगे। रक्षा मंत्री जी ने जो रिपोर्टस दिखाई हैं, उनमें सच्चाई है कि सब पत्रावलियों पर है। इसमें कोई दिक्कत नहीं है, ग्रह मंत्री जी भी देख सकते हैं कि क्या-क्या लिखा है और क्या-क्या सरकार ने किया है। परीक्षण को यहां तक लाने के लिए जितना बजट हम लोगों ने दिया, उतना बजट कभी किसी ने नहीं दिया। परीक्षण को सफल बनाने में सबसे ज्यादा योगदान भारतीय वैज्ञानिकों का है। इसके अलावा परीक्षण को सफल बनाने, इतना पैसा देने में सबसे ज्यादा योगदान संयुक्त मोर्चे की सरकार का है। उस रिपोर्ट को रक्षा मंत्री जी देखेंगे, ग्रह मंत्री जी देखेंगे और वित्त मंत्री जी देखेंगे कि कितना पैसा उपलब्ध कराया गया । जो कुछ उपकरणों की कमी थी, उसको पूरा किया गया। ठीक है, अक्टूबर-नवम्बर के महीने में पोखरण में ऐसी स्थिति थी कि पूरा काम नहीं हो पाया। हम कहते हैं कि इसमें हमारा योगदान नहीं है, वैज्ञानिकों का योगदान है। नेहरु जी से लेकर इंदिरा जी तक सबका योगदान है, लेकिन आपका रत्ती भर भी योगदान नहीं है। भारतीय जनता पार्टी या आपकी सरकार देश को गुमराह करने की कोशिश कर रही है।

... (व्यवधान)

पूरा देश सुन रहा है, आपका रत्ती भर भी योगदान नहीं है।

... (व्यवधान)

हम बड़ी मजबूती के साथ कहते हैं कि आपका रत्ती भर भी योगदान नहीं है। आप देश को बहुत दिनों तक मूर्ख नहीं बना सकते हैं।

जहां तक नुकसान और फायदे की बात है, उसको भी देख लीजिए। सदन में बहस चल रही है। हमारा देश गौतम का देश कहलाता है। हमारा देश गांधीजी का देश कहलाता है। हमारा देश गुट-निरपेक्ष देशों में सबसे अहम भूमिका निभाने वाला देश है। सारे विश्व में गैर-बराबरी के विरूद्ध संघर्ष करने वाला देश है और अहिंसा का संदेश देने वाला देश है। हम अपनी सुरक्षा पूरी रखेंगे, लेकिन जिस तरह से आप धमकाते हैं, वह ठीक नहीं है। जिस प्रकार एक मंत्री जी बोले, उसके क्या नतीजे होंगे। उन्होंने कहा पाकिस्तान, समय-जगह-दिन निश्चित कर ले, उसी दिन हम तैयार है चौथी लड़ाई लड़ने के लिए। इस तरह की बात कहना, क्या फूहड़पन नहीं है? दूसरे भाजपा नेता का बयान हैं यह जो परीक्षण हुआ है, वह न्यूक्लीयर टैस्ट नही । बल्कि राष्ट्रीयता का परीक्षण हुआ है। मैं पूछता हूं, इसका क्या मतलब हुआ? इसका मतलब यह हुआ कि इनकी नीतियों को जो बेनकाब करे, वह देशद्रोह है और जो इनका समर्थन करें, वह देशभक्त है। हमें देश भक्ति के प्रमाण-पत्र इनसे नही लेंने होंगे!

... (व्यवधान)

इन लोगों से कि हम लोग देशभक्त हैं

... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्यः यह राष्ट्रीयता है।

... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : हमे पता है। ज्यादा न कहिए, हम बता देंगे कि आपकी राष्ट्रीयता कहां थी।

... (व्यवधान)

अंग्रेजों के साथ थे।

... (व्यवधान)

श्एक संयमी और देश के बड़े परिपक्व नेता माने जाते हैं, इसमें दो राय नहीं है, उनसे हमारे वैचारिक मतभेद हैं लेकिन फिर भी हम यह मानते हैं कि आडवाणी साहब एक गंभीर, परिपक्व देश के नेता हैं। उन्होंने भी कह दिया कि भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न देश बन गया है। इसलिए पाकिस्तान बाज आ जायें। सन् १९७१ को याद करो। जब से एटम बम बना तो क्या उस दिन से गोलीबारी बंद हो गई, घुसपैठिए आने बंद हो गए?

... (व्यवधान)

हमने ही बंद किया, आपने कुछ नहीं किया।

... (व्यवधान)

और कहा पाक बाज आए, भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बन गया है- क्या वास्तव में बन गया है, क्या इसमें सच्चाई है? सारे वैज्ञानिक कह चुके हैं कि अभी हम बम बनाने लायक हो गए हैं लेकिन उसके और पहलू भी हैं- चलाने को, खिंचने को, फेंकने को, उसमें क्या प्रगति है, जरा आप बता दो? मैं प्रधान मंत्री जी से पूछना चाहता हूं।

... (व्यवधान)

इसके लिए गोपनीयता भंग करना नहीं चाहते हैं। उसी के लिए पैसा देकर आए हैं। उसके लिए संयुक्त मोर्चा सरकार ने करोड़ों नहीं बल्कि अरबों दिया हैं। इसलिए हमने कहा कि आप अभी नहीं बन पाए हैं।

महोदय, दूसरी बात यह है कि जो भारत थर्ड वर्लड में प्रमुख स्थान रखता है लेकिन आज उस पर आशंका है, अविश्वास है। सबसे ज्यादा अविश्वास किस को है कि आज रक्षा के मामले में जितनी भी रूस ने हमारी मदद की है, हर मौके पर की है तथा अब भी की है, १९८६-८७ से नेहरू जी के टाइम से लेकर अब तक लगातार की है- उसने सबसे पहले क्या रिएक्शन दिया था, हमको धोखेबाज कह दिया, रूस ने हमको धोखेबाज कहा कि मुझे धोखा दिया गया। हम भी रूस गए थे, उनकी क्या राय थीपरवाह मत करो, हम आज हिन्दुस्तान की रक्षा की जिम्मेदारी लेते हैं। सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत कर दो। हमने कहा कि सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत नहीं होंगे और आज भी कह रहे हैं कि सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत करने के लिए हम और हमारी पार्टी किसी भी कीमत पर तैयार नहीं हैं। जब तक दुनिया

के अंदर गैर बराबरी हथियारों की है या सारी दुनिया के हथियार पूरे के पूरे समुद्र में फेंक नहीं दिए जाते हैं तब तक सी.टी.बी.टी. या एमटी पर दस्तखत करने का कोई सवाल ही नहीं होता और आज आप पीछे के रास्ते से सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत करने के लिए तैयार बैठे हैं। आप सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत करेंगे, आप देश को कहां ले जा रहे हैं? अगर सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत करने की बात भी आपने कही तो पूरा हिन्दुस्तान आपके खिलाफ खड़ा होगा, आपको कोई निकलने नहीं देगा। सी.टी.बी.टी. पर क्या गुप्त रूप से दस्तखत करने का आपका इरादा है। यह साफ है, स्पष्ट है कि परीक्षण के बाद इंदिरा जी ने कहीं भी प्रेस कांफ्रेंस नहीं की। उसका नतीजा यह हुआ कि दुनिया के अंदर कहीं भी तीव्र प्रतिक्रिया नहीं हुई, आज ऐसी प्रतिक्रिया क्यों हुई। केवल श्रेय लेने के लिए, राजनीतिक लाभ उठाने के लिए आपने प्रेस कांफरेंस की और कहा कि हमारे पास कितने वैपन्स हैं, उनकी डिवाइस को भी सारी दुनिया को बता दिया।

... (व्यवधान)

इससे ज्यादा सुरक्षा के लिए और क्या खतरा हो सकता है। प्रेस कांफ्रेंस करके प्रधानमंत्री जी ने सबसे बड़ा खतरा देश के सामने खड़ा किया और फिर उन्होंने क्या कहा कि हम बहुत बड़े बहादुर हैं और हम सब कायर निकले थे, फाइलों पर केन्द्रित रहे। फाइले टेबल पर रही ।हमारे गुजराल साहब से लेकर, हम तो कोई बहादुर नहीं थे, ये बहादुर निकले परन्तु उसी दिन घुटने टेक करके अमेरिका को चिट्ठी लिख दी। चिट्ठी लिखने का मतलब है कि या तो घुटने टेके हैं या मिलिभगत है, दोनों में से एक बात है, इसका जवाब दें। अगर मिलिभगत नहीं है तो क्या है आप बताएं। अमेरिका नहीं चाहता है कि हिन्दुस्तान, पाकिस्तान,बंगलादेश और चीन की दोस्ती हो। हम चाहते हैं कि दोस्ती हो, क्योंकि अगर दोस्ती होगी तो सबसे ज्यादा शक्तिशाली मुल्क अगर कोई होगा तो वह हिन्दुस्तान होगा।

आपने अमरीका को यह लिखकर कहा कि हमने पाकिस्तान और चीन की वजह से ये विस्फोट किए हैं, आपकी वजह से नहीं किए हैं। क्या यह मिलीभगत नहीं है? यह मिलीभगत है। अखबारों में भी यह आ गया है। टाइम्स ऑफ इंडिया के १८ मई के इश्यू में यह है।

"The whole exercise was executed by the B.J.P. in connivance with the U.S. authorities."

इससे साफ हो गया है कि अमरीका के साथ मिलीभगत है। अगर ऐसा नहीं है तो हम आपके सामने उदाहरण पेश करके इसे प्रमाणित करेंगे। यदि मिली भगत नही है तो अमेरीकी नेताओ ने अपने बयान क्यों बदले । अगर यह मिलीभगत नहीं है तो क्लिंटन साहब ने भारत की यात्रा अभी तक रद्द क्यों नहीं की।

... (व्यवधान)

हम जानना चाहते हैं कि इसके पीछे क्या रहस्य है? अगर वे यात्रा रद्द नहीं करते हैं तो भारत को ही साफ-साफ कह देना चाहिए कि वे हमारे यहां न आएं। जब उन्होंने हमारे ऊपर प्रतिबंध लगाया है तो हमें क्लिंटन साहब को लिखना चाहिए कि या तो भारत पर से प्रतिबंध हटाओ, अन्यथा भारत पर मत आओ । भारत आने की कोई जरूरत नहीं है।

... (व्यवधान)

दूसरा, अगर प्रतिबंध उन्होंने लगाया है तो यहां, संसद में, प्रधान मंत्री घोषणा कर उनकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर जैसे पैप्सी कोला, कोका कोला, चिप्स और बिस्कुट पर रोक लगा दें। आप तो न जाने कहां-कहां के इतिहास का, क्यूबा और इराक से लेकर लाहौर तक का उदाहरण दे रहे हैं। आप इन कंपनियों पर अभी प्र तिबंध लगाइये तो हम आपका साथ देंगे, हम सभी आपके लिए अभी मेजें थपथपाएंगे। आप प्रतिबंध नहीं लगाते हैं क्योंकि अमरीका के साथ आपकी मिलीभगत है। आपने अमरीका के सामने घुटने टेक दिए हैं।

... (व्यवधान)

आपके पास देश के लोगों की भावनाएं भड़काने के अलावा कोई काम नहीं है। वोट की खातिर ही आप काम करते हैं।

... (व्यवधान)

ठीक ही कहा है कि कूटनीति भी होती है और विदेश-नीति भी होती है। परन्तु रक्षा के मामले में आपको अपने दोस्तों को विश्वास में रखना चाहिए था।

... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्यः जैसे आपने रखा था।

श्री मुलायम सिंह यादव : हां, रखा था। अगर आपने रखा है तो क्यों चीन की एक ही धमकी में बकरी की तरह मिमयाने लगे। चीन ने कहा कि उनकी ९० हजार वर्ग किलोमीटर भूमि पर भारत ने कब्जा किया हुआ है और भारत विश्व की महाशक्ति बनना चाहता है। इसके भारत को गंभीर परिणाम भुगतने पड़ेगे । आप उसी दिन बकरी की तरह मिमयाने लगे और कहने लगे कि हम दोस्ती चाहते हैं। अगर आपमें हिम्मत है तो इस सदन के अंदर कहिये कि १९६२ में चीन ने हमारी जिस जमीन पर कब्जा किया है, मानसरोवर और कैलाश पर्वत से ले करके, उसे वह छोड़ दे। अगर वे हमारी जमीन नहीं छोड़ेंगे तो हम ये बम चला देंगे।

... (व्यवधान)

यह कहो, तो हम आपके साथ हैं।

... (व्यवधान)

अगर आप बहादुर बनते हो तो कहिये।

... (व्यवधान)

लेकिन आप तो चीन की एक ही धमकी से मिमयाने लगे।

... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्यः क्या समाजवादियों ने कहा है?

श्री मुलायम सिंह यादव : हां, समाजवादियों ने हमेशा कहा है और इसी संसद ने संकल्प लिया था कि जब तक चीन हमारी जमीन पर से अपना कब्जा नहीं हटाता है, हम लोग चीन की जमीन पर नहीं जाएंगे, वहां की यात्रा भी नहीं करेंगे। और चीन से कोई राजनैतिक संबंध नही रखेगें

... (व्यवधान)

यह कहना कि हम महान शक्ति बन गये, महाशक्ति बन गये, तो लो चीन से अपनी जमीन,वापस लो हम आपके साथ हैं।

क्योंकि आप महाशक्ति बन गए हैं।

... (व्यवधान)

आप सुन तो लीजिए। आपका उसी तरह हस होगा जिस तरह हिटलर और मुसोलनी का हुआ था। जिस तरह शक्ति के बल पर हिटलर और मुसोलिनी को न समाज से मतलब था, न भाषा से मतलब था, न संस्कृति से मतलब था, केवल शक्ति से मतलब था। इसलिए हिटलर और मुसोलिनी का विनाश हुआ था। आप उसी तरह की बात करके देश को कहां ले जाना चाहते हैं? आपकी इसके पीछे क्या असलियत है। ... (व्यवधान)

श्री सत्यपाल जैन : आपने बयान दिया था कि हमारी सरकार यह टैस्ट करने को तैयार थी लेकिन हमारी सरकार ही टूट गई। आप इसके बारे में कुछ बताइए।

SHRI VAIKO (SIVAKASI): Shri Mulayam Singh Yadav, I have got a great respect for you. We never expected such a statement from you. You are making a comparison with Nazi and Hitlar.

श्री मुलायम सिंह यादव : वह भी बता देंगे। हम बिना बताए एक बात नहीं छोड़ेंगे। आप पूरे के पूरे बेनकाब हो जाएंगे। दूसरे लोग राष्ट्रीयता की बात कहते हैं। आडवाणी जी जैसे बड़े नेता धीरज खो बैठे। एक लखनऊ के मिनिस्टर साहब और महाजन साहब जो कि एडवाजर हैं, उनका कहना ही क्या है। वह कहते हैं कि यह राष्ट्रीयता का परीक्षण है। हम सब देशद्रोही हैं और भाजपा राष्ट्रवादी हैं। अगर हम आलोचना करते हैं या सकारात्मक सुझाव देते हैं तो देशद्रोही हो जाते हैं। हम इससे डरने वाले नहीं हैं। यह भी साबित हो जाएगा कि कौन देशभक्त है, कौन देशद्रोही है? जब मौका आएगा तब हम बता देंगे और देश भक्ति के मामले में भाजपा को भी पीछे कर देंगे। आप क्या-क्या बातें कहते हैं? आज हिन्दुस्तान की जनता को बाहर के देशों से उतना खतरा नहीं है, जितना कि हिन्दुस्तान के अन्दर से है। हम आपको इससे आगाह कर देना चाहते हैं।

गुलाम अली पाकिस्तान के संगीतकार हैं। संगीतकार की कोई जाति नहीं होती। मैं सच बात कह रहा हूं। मैं अभी तक नहीं जानता कि मुकेश किस जाति के थे? कला की कोई सीमा नहीं होतीं। भाजपा के लोगों ने फिदा हुसैन साहब पर हमला किया। भाजपा अध्यक्ष ठाकरे ने हमले का समर्थन किया। संगीत और कला की कोई सीमा नहीं होती और न धर्म व जाति होती है। जब दिलीप कुमार पाकिस्तान गए तो उनका बहुत सम्मान हुआ। उनके जाने से मानो भारत दर्शन हो गया। अब यह कह रहे हैं कि हमें कोई ब्लैकमेल नहीं कर सकता। भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष कहते हैं कि हमें कोई ब्लैकमेल नहीं कर सकता। हमारी भी सरकार रही। हमें किसी ने ब्लैकमेल नहीं किया। आपको कौन ब्लैकमेल कर रहा है? ११ तारीख को किस ने ब्लैकमेल किया? आज की सदन की कार्यवाही को पूरा देश देख रहा है। मैं जब बोलता हूं तो भाजपा को परेशानी होती है। इस बात को सारा देश जानता है। इसमें कोई दिक्कत नहीं है।

... (व्यवधान)

यह कोई नई बात नहीं है। आज पूरे देश की जनता देख रही है कि आपको हम से कितनी परेशानी है? आप जब तक रास्ता नहीं बदलेंगे, परेशानी रहेगी। आप रास्ता बदलिए, आपकी परेशानी दूर हो जाएगी। मालूम नहीं जार्ज साहब यहां हैं या नहीं? हमारे विद्वान साथी जगमोहन जी कश्मीर के बारे में बोल रहे थे।

अब कश्मीर के लिए ज़िम्मेदार कौन है, कितना आपने हथियारों का प्रयोग किया था और दमन की नीति चलाकर भी क्या आप उग्रवादियों का दमन करा सके थे? फिर जार्ज साहब का कल बयान आया था, जार्ज साहब ने क्या मांग की थी? कि जगमोहन को ध्यया जाये । इनके चलते उग्रवाद बढ़ रहा है । मुफ्ती साहब होम मिनिस्टर थे। जनता दल सरकार के दौरान कश्मीर के मामले में तब जार्ज साहब को इंचार्ज बनाया था और उसके बीच में जगमोहन जी वहां थे तो दोनों के बीच में क्या हुआ? क्या वे कामयाब हो गए, क्या उग्रवाद हथियारों के बल पर हटा दिया गया? हथियारों के बल पर आप किसी को नहीं दबा सकते। क्यूबा का उदाहरण आप खुद ही दे रहे हैं। अमेरिका जैसा देश उसे नहीं दबा सका था । जगमोहन कहते हैं कि हमने वैज्ञानिकों का अपमान किया। वैज्ञानिक परीक्षण न होने से निराश होकर हटना चाहते थे इसलिए परीक्षण किया गया ,वैज्ञानिकों को संयुक्त मोर्चा की सरकार ने ही भारत रत्न दिया है। श्री कलाम की भारत रत्न दिलवाने के लिए हमने दो पत्र लिखे ।इसके अलावा वैज्ञानिकों की सर्विसेज़ का ऐक्सटेन्शन भी किया। देश के सामने इतनी असत्य बात रखी गई कि यहां के वैज्ञानिक काम करने के लिए तैयार नहीं हो रहे थे और देश छोड़ने के लिए तैयार थे। ऐसा भ्रम देश में फैलाना गलत है। आपको जानकर ताज्जुब होगा इससे ज्यादा बदनसीबी और क्या होगी वैज्ञानिकों की कि जब इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डा.अब्दुल कलाम को डी.लिट की उपाधि दी जा रही थी जिसमें मैं मुख्य अतिथि था तो उस समय के विधायक जो आज उत्तर प्रदेश में स्टेट मिनिस्टर हैं, उन्होंने उनके समारोह का बहिष्कार किया और उनके खिलाफ नारे लगाते हुए बाहर निकल गए।

श्री वीरेन्द्र सिंह (मिर्जापुर): वह बहिष्कार आपके खिलाफ था, अब्दुल कलाम जी के खिलाफ नहीं था।

... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : वहां की जनता ने, वहां के छात्रों ने, वहां के प्रोफेसर्स ने, वहां के राइटर्स ने, वहां के मीडिया ने और वहां के अखबारों ने बताया कि इनका बहिष्कार और नारेबाजी मेरे खिलाफ नहीं थी। एक शब्द नहीं कहा था ... (व्यवधान)

श्री वीरेन्द्र सिंह : अगर आप कहें तो मैं इस सदन में इसका प्रमाण दे दूंगा। ... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : वहां इतना ज़बर्दस्त कार्यक्रम हुआ कि इनकी टांय-टांय फिस्स हो गई। बाहर जाकर आप कुछ भी बयान दे दो।

... (व्यवधान)

श्री वीरेन्द्र सिंह : रोमेश भंडारी वहां के राज्यपाल थे, आपने उनसे मिलकर लाठीचार्ज कराया और तब आपके खिलाफ आंदोलन हुआ।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : लालमुनी चौबे जी, कृपया आसन ग्रहण कीजिए।

... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : अगर वैज्ञानिकों का अपमान किसी ने किया है तो भाजपा ने ही किया है। और अब्बुल कलाम जैसे महान वैज्ञानिको का अपमान किया, क्यों कि वह मुसलमान थें । यह आपकी मानसिकता है। हम लोगों ने उनको सम्मानित किया है और एक भी वैज्ञानिक नहीं कह सकता कि हमारी सरकार में उनमें कोई निराशा आई। उन्होंने काम बहुत ज्यादा उत्साह के साथ किया और उनका मनोबल भी संयुक्त मोर्चा की सरकार ने बढ़ाया।

... (व्यवधान)

आप कहते हैं कि इतना नुकसान हुआ, कल चंद्रशेखर जी कह रहे थे कि कई करोड़ रुपये का घाटा हो गया क्योंकि रुपये की कीमत घट गई। यशवन्त सिन्हा जी जानते हैं,कि आज की रात में ही ६० करोड़ का घाटा हो गया क्यो कि मूल्य ४० पैसे गिर गया अखबारों में छप गया है कि आप रक्षा मंत्रालय को ४० हजार करोड़ रुपया देने जा रहे हैं। यह कितना सच और कितना गलत है हम नहीं जानते। अगर ४० हजार करोड़ रुपये का बजट होगा तो ३७.५ हजार करोड़ रुपये का बजट हमारे समय में था और अब जब रुपये की कीमत घट गई है तो पिछले साल जितना बजट था, उससे भी कम बजट होगा, फिर आगे आप महाशक्ति बनने जा रहे हैं तो फिर आगे की रक्षा तैयारी रखी की रखी रह जायेगी । (व्यवधान)

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूडी, एवीएसएम : आपसे पहले साल कितना बजट था? आप सदन को गुमराह कर रहे हैं।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : माननीय सदस्य श्री खंडूरी जी, लोगों ने इसे बुरा माना है। बीच-बीच में उठकर हस्तक्षेप करना उचित नहीं है, यह संसदीय प्रणाली और संसदीय मर्यादा के विरुद्ध है।

... (व्यवधान)

कृपया शांत रहें।

श्री मुलायम सिंह यादव : सभापति महोदय, मैं कंक्लूड कर देता हूं

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप कंक्लूड कीजिए।

श्री मुलायम सिंह यादव : मैं अभी कंक्लूड कर देता हूं। आप इन्हें रोक दीजिए, मैं अभी खत्म कर देता हूं। सभापति महोदय, यहां पर कहा गया कि वैज्ञानिकों ने सराहनीय कार्य किया है। लेकिन मेरी प्रार्थना है कि उनको राजनीति में मत घसीटिये। वे आगे आकर प्रेस कांफ्रेंस करे, उनको अपना काम करने दीजिए। जहां उन्हें उचित लगेगा वे प्रेस कांफ्रेंस करेंगे, हम भी करते रहे हैं। रक्षा मंत्री और भी रहे हैं। उन्हें अपना काम करने दीजिए

... (व्यवधान)

उस दिन हमें प्रधान मंत्री जी के यहां बुलवाया गया। सब नेता गये, पवार साहब भी गये। हम समझे कि कोई बातचीत होगी। वहां पर कहा गया कि यहां प्रेजेन्टेशन होगी, ब्रीफिंग होगी। मैंने कहा कि इस टीम ने तो हमारे साथ भी काम किया है, ये जो कुछ बता रहे हैं, ब्रीफिग कर रहे है वह हमें पहले से पता है, असली बात बताइये। अब क्या हम वैज्ञानिकों से पोलिटिकल सवाल करेंगे? क्या वहां सारे नेता उनसे पोलिटिकल सवाल करेंगे। हमने लालू जी और चिदम्बरम जी को भी कहा कि चलिये, इन वैज्ञानिकों से हम क्या सवाल करेंगे? सवाल करना है तो हम प्रधान मंत्री जी से करेंगे? आडवाणी जी से सवाल करते तो वह जवाब देते। वैज्ञानिकों को राजनीति में मत घसीटिये। सबसे ज्यादा खराब काम ये लोग पहली बार देश में कर रहे हैं। हम लोगों को उनसे जवाब दिलवा रहे हैं, वे हमें क्यों ज वाब देंगे। वे अपना काम करेंगे और जहां उचित लगेगा वहां जवाब देंगे, आपने हमें बुलाया तो क्या हम उनसे बहस करेंगे, उनके मनोबल को गिरायेंगे। हम उनसे पैसों की बात करेंगे। उन्होंने कहा आप पैसा लाओ, हम यह करेंगे, वह करेंगे। खुद चिदम्बरम साहब ने पैसा मांगा और कहा कि अभी हम परमाणु बम बनाने की स्थिति में है, लेकिन अभी चलाने की स्थिति में कहां हैं। अगर हैं भी तो आप जो कह रहे हो कि हम बड़े महान शक्तिशाली हो गये हैं, वह तो रिकार्ड पर है कि आपके पास ७७७ कम्बैट एयरक्राफ्ट हैं, पाकिस्तान के पास ४२९ हैं और चीन के पास ३७४० हैं। भारत पाकिस्तान से आठ गुना बड़ा हैं। आपके पास ७७७ हैं और उनके पास ४२९ हैं। भारत के पास ४२९ के आठ गुना होने चाहिए। पारम्परिक युद्ध के लिए तैयारी करनी चाहिए । देश की सुरक्षा हेतु आप जितनी ताकत ले सकते हो लो , हम लोगों का जितना योगदान ले सकते लो हो, सरकार में रहकर आप जितना कर सकते हो करो, अगर हमें टैक्स भी देने पड़ेगें तो भी हम तैयार हैं, आप जो कुछ कर सकते हो हम उसके लिए तैयार है। लेकिन आप गलतफहमी में रहते हैं

... (व्यवधान)

जितना बजट मांगा था हमने उससे ज्यादा दिया है। हम आपके सामने कहना चाहते हैं और रूस के विशेषज्ञों ने भी कहा कि अभी हिंदुस्तान को १० और परीक्षण करने होंगे, तब परमाणु शक्ति संपन्न देश बन जायेग । फिर आप देश से क्यों कहते हैं कि हम परमाणु शक्ति बन गये हैं। यह ठीक है कि हमारे वैज्ञानिकों ने शानदार कार्य किया है।

...(व्यवधान)

श्री विजय गोयल : यह अच्छा हुआ है कि हमने अभी सफल परमाणु परीक्षण कर लिया, ताकि और परीक्षण हम बाद में कर सकें।

सभापति महोदय : अब आप कंक्लूड कीजिए।

श्री मुलायम सिंह यादव : मैं बता चुका हूं कि परीक्षण तो सब सफल हुए हैं, कभी भी दुनिया में कोई परीक्षण असफल हुआ ही नहीं है। कुल २४०० से ज्यादा परीक्षण हो चुके हैं। अब आपके पास कितनी मिसाइलें हैं, यह हम नहीं बतायेंगे। जब प्राइम मिनिस्टर साहब बताने में लगे हैं तो वे ही जवाब दें कि हमारे पास कितनी मिसाइलें हैं, बताइये, हमें संतुष्टि हो जायेगी। दो महीनें में आपने और कितनी मिसाइलें बना ली हैं और क्या इस एटम बम के लिए कमाण्ड तमाम संरचना तैयार कर ली है? यह प्रधान मंत्री जी बतायें या आडवाणी जी बता दें। अगर अपने आप बता दें तो मुझे कोई दिक्कत नहीं है। हम तो प्रधान मंत्री जी से पूछ रहे हैं, चाहे तो रक्षा मंत्री जी बता दें, क्या आपके पास परमाणु पनडुब्बी तैयार हो गई है, बता दीजिए, मिसाइलों के बारे में भी बता दीजिए

... (व्यवधान)

वैज्ञानिको का मत है इसके लिए १० वर्ष का समय व २५ हजार करोड़ धन चाहिए। (व्यवधान)

श्री विजय गोयल : सभापति महोदय, मुझे ऑब्जेक्शन है, पूर्व रक्षा मंत्री जी अपनी सैन्य शक्ति को कमजोर दिखाने की कोशिश कर रहे हैं और हो सकता है कि इनके पास कोई तथ्य हों जिनको ये उजागर करने की कोशिश कर रहे हैं।

... (व्यवधान)

मेरा यह कहना है कि अपनी सैन्य शक्ति को कम आंकने का कारण क्या है।

... (व्यवधान)

16.00 hrs.

श्री मुलायम सिंह यादवः सभापति महोदय, जवाब देने के लिए प्रधान मंत्री महोदय के स्थान पर इन्हें ही खड़ा कर दीजिए। सब को कन्विंस कर दिया जाए कि प्रधान मंत्री की जगह पर ये जवाब देंगे। मैं यह कह रहा हूं कि आप स्वंय भारत को महाशक्ति कह रहे हैं, यह गलत है। आप गलत क्यों बोल रहे हैं।

... (व्यवधान)

श्री विजय गोयल : हम कह रहे हैं कि हमारी शक्ति बढ़ रही है और हम महाशक्ति बन रहे हैं। आप ऐसा कहकर देश की सेना का मनोबल क्यों तोड़ रहे हैं। आप इस प्रकार की बातें कहकर देश की सेना के मनोबल को क्यों कमजोर कर रहे हैं।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय कृपया शांति रखिए। कृपया बैठिए। आप उनको बोलने दीजिए। मुलायम सिंह जी आप बोलिए। बीच में इस प्रकार से उठकर बोलना ठीक नहीं है। आप किस नियम के तहत बोल रहे हैं?

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : देश की रक्षा का मामला गोपनीय रहना चाहिए। देश की सुरक्षा का मामला सर्वोपरि है।

... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादवः सभापति महोदय, हमने कोई भी ऐसी बात नहीं बोली है जिससे देश की सुरक्षा को खतरा साबित हो। हमने कोई भी गोपनीयता भंग नहीं की है। हम तो केवल पूछ रहे हैं कि क्या आपके पास ये चीजें हैं। अगर आप बताना चाहें, तो बताएं, न बताना चाहें, तो न बताएं। हमने कोई भी गोपनीयता भंग नहीं की है। हम तो यह पूछ रहे हैं क्या आपके पास ये चीजें हैं? अगर हैं, तो हमें खुशी होगी। इसमें देश की रक्षा संबंधी कोई गोपनीयता भंग नहीं होती है।

... (व्यवधान)

MAJOR GENERAL BHUVAN CHANDRA KHANDURI, AVSM : Take it very seriously. Do not take it so lightly...(Interruptions)

सभापति महोदय, हमारे देश के पूर्व रक्षा मंत्री महोदय, सदन में देश की रक्षा के बारे में खुला बयान दे रहे हैं, जो कदापि देश के हित में नहीं है। क्या पूर्व मंत्री व पूर्व सैनिक श्री राजेश पायलट जी, जो यहां उपस्थित हैं, वे उनकी इन बातों का समर्थन कर रहे हैं? मैं उनसे दुबारा निवेदन करता हूं कि क्या वे इनकी यहां कही गई बातों का समर्थन करते हैं?

... (व्यवधान)

16.04 hrs. (Mr. P.M. Sayeed , in the chair)

श्री लाल मुनी चौबे : सभापति महोदय, देश के पूर्व रक्षा मंत्री महोदय ने सदन में इन बातों को कहकर देश की रक्षा संबंधी गोपनीयता भंग की है। इसलिए आपके माध्यम से मेरी मांग है कि ये सदन में देश से माफी मांगें।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : श्री मुलायम सिंह जी, आपका समय तो हो गया। आपने ४५ मिनट ले लिए हैं।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : I am on my legs. Shri Mulayam Singh Yadav, you have already taken about 45 minutes. Kindly bear with me. Kindly conclude now.

श्री मुलायम सिंह यादवः सर, इन लोगों ने हमें बीच-बीच में टोक-टोक कर और रोक-रोक कर हमारा ज्यादा समय ले लिया है।

... (व्यवधान)

श्री लाल मुनी चौबे : सभापति महोदय, मेरी आपत्ति सुन लीजिए।

... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव

MR. CHAIRMAN : I am on my legs.

श्री लाल मुनी चौबे : सभापति महोदय, यह बहुत खराब बात है, जो अभी श्री मुलायम सिंह जी ने कही।

... (व्यवधान)

आप मेरी आपत्ति सुन लीजिए।

... (व्यवधान)

सभापति जी, मेरी आपत्ति सुन ली जाये।

... (व्यवधान)

मैं आपके माध्यम से श्री मुलायम जी से जानना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि दो महीने में क्या हमने परमाणु पनडुब्बी बना ली है? इसका मतलब इसके पहले ऐसा नहीं था। ये हमारी सेना के बारे में, उसको बिल्कुल चीड़-फाड़ करके एक्सप्रैस कर रहे हैं। यह काम केवल ...। ही कर सकता है, देश भक्त इस तरह का सवाल नहीं उठा सकता। ... (व्यवधान) यह इनको वापस लेना चाहिए।

... (व्यवधान)

डा. शफीकुर्रहमान बर्क (मुरादाबाद) : सभापति महोदय, आप इसे कार्यवाही से निकलवा दीजिए।

... (व्यवधान)

... (व्यवधान)

16.06 hrs. (At this stage shri Pradeep Kumar Yadav and

some other Hon. members came and stood near the Table)

16.07 hrs.

At this stage Shri Pradeep Kumar Yadav and

some other Hon. members went back to their seats)

श्री अजीत जोगी : सभापति महोदय, यह .....शब्द कार्यवाही से निकलवा दीजिए। ... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Shri Jogi, kindly be seated.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: May I appeal to all of you to be seated? Do you allow me to speak or not? This is a very delicate issue.

श्री अजीत जोगी : आपके सदस्य किसी को बोलने नहीं दे रहे हैं।

... (व्यवधान)

मंत्री जी ने दो बार आश्वासन दिया था कि हम अपने सदस्यों को संतुलित करेंगे ... (व्यवधान) माननीय मुलायम सिंह जी बोल रहे हैं लेकिन उनको कोई भी बोलने नहीं दे रहा है।

... (व्यवधान)

अब आप बोलने वाले हैं तो हम आपको भी बोलने नहीं देंगे।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: You please allow me to have my say. Do you not allow me also to speak? Please be seated.

श्री अजीत जोगी : आपने कितनी बार आश्वासन दिया है, श्री आडवाणी जी ने कितनी बार आश्वासन दिया है। क्या इस तरह से संसद चलेगी?

... (व्यवधान)

हम भी किसी को बोलने नहीं देंगे।*

... (व्यवधान)

आडवाणी जी बोलेंगे तो हम भी उनको बोलने नहीं देंगे।

... (व्यवधान)

---

* Expunged as ordered by the chair.

श्री मोहन सिंह (देवरिया): सभापति महोदय, इतनी गंभीर बात हो गयी। इस पर माफी मांगने की बात है।

... (व्यवधान)

आप उसको कार्यवाही से निकलवा दीजिए। ... (व्यवधान) आप उनसे माफी मंगवाइये।

... (व्यवधान)

डा. शफीकुर्रहमान बर्क : यह संसद का अपमान है।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: I do not want anybody to express any derogatory remarks against any Member particularly with regard to our security. Any such remarks expressed here would be expunged. Please continue.

श्री मोहन सिंह : इतना ही काफी नहीं है।

... (व्यवधान)

यह बहुत गंभीर बात है।

... (व्यवधान)

सत्ता पक्ष के एक जिम्मेदार सदस्य ने ऐसी बात कही है। ... (व्यवधान)

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI L.K. ADVANI): If anyone from the Government Benches has described an hon. Member of this House as .....I apologise for it apart from the fact that you may expunge it.

श्री मुलायम सिंह यादव : सभापति महोदय, मैं इसलिए कह रहा था क्योंकि जार्ज साहब ने कहा कि मैंने विस्फोट इसलिए किया कि अभी कुछ नहीं हुआ है। इसलिए हमने कुछ बातें कहीं कि या तो उनको ब्रीफ गलत किया गया है या उन्होंने पत्रावलियां नहीं पढ़ी हैं, इसलिए मैं गोपनीयता को भंग नहीं करना चाहता। हमने जो कुछ किया है, उनको जार्ज साहब से कहेंगे। उनको बतलायेंगे और अगर उनको गलत ब्रीफ किया है तो उनको स्वीकार कराएंगे कि हमने कुछ नहीं किया है। इसीलिए हमने इन बातों को कहना चाहा। इसके अलावा मेरी और कोई मंशा नहीं थी।

यह क्या साबित करता है। परमाणु टैस्ट की आड़ में देश के साथ एक और छल किया जा रहा है। क्या कारण थे कि आपने परीक्षण के ३-४ दिन के अंदर अमरीका एवं जापानी कम्पनियों को बिजली योजनाओं के लिए सरकारी गारंटी मंजूर की। हम पूछना चाहते हैं कि इसके पीछे क्या मंशा है। आपने तेल उत्पादन के लिए १८ ब्लॉक विदेशी कम्पनियों को मंजूर किए। इसी तरह २८ विदेशी कम्पनियों को देश के ५०,००० वर्ग किलोमीटर भाग पर खान का लाईसैंस दिया। जब ि वस्फोट करके जमीन का टैस्ट किया जाएगा तो विदेशी कम्पनियां हमारे देश की रक्षा की पूरी गोपनीयता लेंगी। यह देश के लिए बहुत बड़ा खतरा पैदा किया गया है। पता लगा लें कि कौन देशभक्त है, कौन देशद्रोही है। विदेशी कम्पनियां विस्फोट के बहाने क्या-क्या करेंगी। इससे हमारे देश की रक्षा को सबसे ज्यादा खतरा पैदा हुआ है। यह क्यों किया है, क्या यही है स्वदेशी आंदोलन। ... (व्यवधान) ५०,००० वर्ग किलोमीटर हिन्दुस्तान की जमीन परीक्षण के चार दिन के अंदर दी है और नारा देते हैं स्वदेशी का, देश को बहकाते हैं स्वदेशी के नाम से। इसलिए हम कहना चाहते हैं कि यह स्वदेशी का नारा नहीं है। राष्ट्र हित के साथ इतना बड़ा खिलवाड़ करना, इससे हमारे देश की रक्षा सारी गोपनीयता भंग हो जाएगी। यह तो स्वीकार करना पड़ेगा कि वही शक्तिशाली है जो आर्थिक दृष्टि से मजबूत है। हम फिर दोहराना चाहते हैं कि रक्षा के मामले में हमें अपनी शक्ति को मजबूत करना चाहिए जिससे दुनिया का कोई भी देश हमारे देश की तरफ बुरी निगाह से न देख सके।

हमने सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत करने से साफ मना कर दिया। रूस ने भी कहा, प्रधानमंत्री जी ने कह दिया था कि हम हस्ताक्षर नही करेगें, तो इससे यह साफ था कि हमारे पास ऐटम बम है। उसके साथ हमने कई बार कहा कि हम किसी पर हमला नहीं करेंगे। यदि कोई हमला करेगा तो दुश्मन की जमीन पर लड़ाई होगी। लेकिन यह कैसा काम किया कि पाकिस्तान और चीन के विषय में अमेरिका को चिट्ठी लिखकर चीन व पाक एक साथ खड़ा कर दिया। हमारी नीति ऐसी होनी चाहिए कि पड़ोसी देशों से अच्छे रिश्ते हों। लेकिन आपने चीन और पाकिस्तान दोनों से अच्छे रिश्तो को खत्म कर दिया। आज पूरब से पश्चिम तक पूरी सीमा पर अशांति है। चीन और पाकिस्तान को इक्ट्ठा करके हमारे देश की सुरक्षा के लिए सबसे बड़ी चुनौती पैदा की है। जब चीन के बारे में कहते हैं कि बड़े प्रयासों के बाद चीन से संबंध अच्छे हो रहे थे, कांग्रेस की सरकार ने, राजीव गांधी से लेकर श्री गुजराल तक सबने उससे अच्छे संबंध बनाए जिसका नतीजा यह निकला कि १९६५ व १९७१ की जब पाकिस्तान से लड़ाई हुई थी तो चीन खामोश देखता रहा, उसने भारत का विरोध नहीं किया और न ही एक शब्द बोला । आपने पाकिस्तान, बंगलादेश के टुकड़े-टुकड़े करवा दिए। हमारे बहादुर लड़े, ठीक काम किया, हमारी सेना लड़ी, इंदिरा जी लड़ीं । लेकिन इस बार आपने चुनौती देकर चीन का विरोध किया।

बिजली, पानी की समस्या हमसे हल नहीं होती। अंग्रेजी हुकुमत में हमारा देश गुलाम था। हिन्दुस्तान में कई बार अकाल पड़ा लेकिन उसके बाद भी हिन्दुस्तान के किसानों ने कभी आत्महत्या नहीं की। आज हमारे किसानों की यह दशा है। कि उन्हें आत्महत्या करनीं पड़ रही है। आज हिन्दुस्तान को किसी से खतरा है तो उन आंतरिक शक्तियां से जो मंदिर के नाम पर, हिन्दू-मुसलमान के नाम पर बातें करती हैं। मुरादाबाद में मुस्लिम बच्चो को (८ से १० साल के) ३०२ का मुलज़िम बनाकर दंगा कराकर आपने जो किया है, उ.प्र. में टाडा में १४-१४ साल के सिख लड़कों को जेल में बंद किया था।

है, जो हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाइयों की एकता को खंडित करने वाले हैं, उससे देश को सबसे बड़ा खतरा है।

श्हमारी बहादुर सेना और हमारी बहादुर जनता एक होकर विदेशी शक्ति कितनी भी ताकतवर होगी, हमारा हिन्दुस्तान मुकाबला करेगा और दो टूक जवाब देगा और दुश्मन की धरती पर ही लड़ाई होगी और हम हिन्दुस्तान की धरती को लड़ाई का मैदान नहीं बनाना चाहते हैं, यह अमेरिका की साजिश है। आपकी नीतियों के कारण अगर लड़ाई का मैदान हिन्दुस्तान बनता है तो हमको तकलीफ होगी। अगर मजबूरी में लड़ाई का मैदान होता ही है तो लड़ाई का मैदान हिन्दुस्तान न बने, दुनिया का कोई और मुल्क बने, इस बात का हमें ध्यान रखने की जरूरत है। हम अपनी पारम्परिक शक्ति को बढ़ायें और उस शक्ति को मजबूत करें।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको धन्यवाद देते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

... (व्यवधान)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): I have been conceding to everybody. If I am not called upon to speak, I will have to stage a walk-out.

श्री मदन लाल खुराना : आप ऐसा नहीं करें। उधर से आपके सात लोग बोले हैं और यहां से चार लोग बोले हैं।

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : I must concede to the Minister. The Speaker had said that after Shri Advani, I can speak.

">

गृह मंत्री (श्री लाल कृष्ण आडवाणी) : सभापति जी, १९४९ में भारत स्वतन्त्र हुआ और तब से लेकर मुझे ४-५ ऐसे अवसरों का स्मरण होता है, जब देश में बहुत प्रसन्नता हुई। लेकिन प्रायः सभी अवसरों पर जब देश में प्रसन्नता हुई और सर्वसाधारण भारतीय गर्व का अनुभव करने लगा तो विश्व भर में हमारी बड़ी तीखी आलोचना हुई।

मुझे स्मरण आता है कि जब १९४८ में हैदराबाद भारत के साथ विलय करने को तैयार नहीं था और उस समय वहां पर कार्रवाई करनी पड़ी और जिसके परिणामस्वरूप हैदराबाद को भारत के साथ विलय करने के लिए विवश होना पड़ा तो जो लोग विश्व में हमारे मित्र माने जाते थे, ऐसे व्यक्तियों ने भी हमारी बड़ी आलोचना की। जब गोवा का मुक्ति संग्राम हुआ तो वही चीज हुई। गोवा मुक्त हुआ, तब भी वैसा ही हुआ। यहां तक कि एडलाइज़ स्टीवेंशन जो वैसे भारत के परम मित्र थे, व्यक्तिगत रूप से उन्होंने इतनी तीखी आलोचना हमारी राष्ट्र संघ में की और यूनाइटिड नेशंस सिक्योरिटी काउंसिल में हमारे खिलाफ बाकायदा प्रस्ताव रखा गया। वह प्रस्ताव पश्चिमी राष्ट्रों के समर्थन से पारित भी हो जाता, अगर सोवियत रूस उसको वीटो न करता। इसीलिए जब इसकी बात होती है न कि विश्व में हमारी आलोचना हो रही है तो उसको कसौटी नहीं मानना चाहिए। उसका उल्लेख कम से कम यहां पर करने की जरूरत नहीं है। हां, उसका जितना कुछ ध्यान रखना है, वह रखना चाहिए।

भारत कभी भी अन्तर्राष्ट्रीय अभिमत के बारे में उदासीन नहीं हो सकता। कभी नहीं हो सकता। लेकिन उसका अर्थ नहीं है कि वह निर्णायक बने, वह निर्णायक नहीं बन सकता। मुझे याद है कि पोखरण में जब पहला-पहला अणु विस्फोट हुआ था, उस समय भी काफी आलोचना हुई थी, लेकिन देश के भीतर, यह १९७४ की बात है, मैं उस समय भारतीय जनसंघ का अध्यक्ष था और अध्यक्ष के नाते एक लेख के रूप में, वक्तव्य के रूप में मैंने जो बात कही, उसको मैं थोड़ा सा ही उद्धृत करूंगा। मैंने कहा किः

"The Government's announcement that India has successfully carried out an underground nuclear explosion has been hailed with hallelujah from all sides.

Only twice in recent years has one witnessed such a mood of national elation - first when the Indian Army entered Dacca to liberate Bangladesh and now when India has virtually entered the nuclear club."

मैं इस बात का स्मरण इसलिए कर रहा हूं कि सचमुच कल बहस सुनते हुए मुझे थोड़ा सा अफसोस हुआ था। इस बात का अफसोस हुआ था कि जब कुछ देशों ने हमारी आलोचना की, समझ में आता है, लेकिन गुट-निरपेक्ष आन्दोलन के जो राष्ट्र हैं उनके सम्मेलन में जो प्रस्ताव पारित हुआ वह वस्तुतः भारत के इस अणु विस्फोट का समर्थन था, चाहे भारत का नाम नहीं लिया गया। ऐसी स्थिति में हमारे बहुत प्रमुख सहयोगी और जो साधारणतः हरेक मामले का सही विश्लेषण करते हैं और विश्लेषण सही भी न करते हों, पूरी तरह आफ द ट्रैक न हों, उनके पहले-पहले रिएक्शंस प्रायः पोजीटिव थे, ऐसा मुझे नहीं दिखा। लेकिन कल जब मैं उनको सुनने लगा तो बड़ा आश्चर्य हुआ। इसीलिए मैंने प्रधान मंत्री जी से अनुमति मांगी कि मैं भी कुछ बोलूं। साधारणतः यह विषय ऐसा है जिसको बहुत विस्तार से प्रधान मंत्री जी ने अपने आरम्भिक वक्तव्य में रखा है। प्रतिरक्षा मंत्री जो सीधे तौर से इस विषय से जुड़े हुए हैं वे भी बोले। चूंकि प्रधान मंत्री विदेश विभाग का भी कार्य सम्भालते हैं, विदेश विभाग का कोई अलग से मंत्री नहीं है इसलिए विस्तार से बहस का उत्तर देंगे, ऐसा मुझे विश्वास है। इससे सभी पहलुओं पर प्रकाश पड़ जाएगा।

मैं मानता हूं कल यहां पर एक बात को चुनौती दी गई। वह भी प्रमुख लोगों के द्वारा दी गई कि जब भारत सरकार कहती है कि हमने यह निर्णय देश की सुरक्षा की दृष्टि से किया है, तो उन लोगों ने कहा कि सुरक्षा किससे? सुरक्षा का संकट किससे है? हमें कोई संकट दिखाई नहीं देता। कोई संकट है भी नहीं, फिर भी सुरक्षा की बात करते हैं, लेकिन सुरक्षा कहां से आ गई? आप कह देते कि हमारे घोषणा पत्र में लिखा हुआ है इसीलिए हम कर रहे हैं, ठीक है, चलता, लेकिन जब आप संकट और सुरक्षा की बात कर रहे हैं तो हमें समझाएं कि यह संकट कहां से है और यह संकट कब पैदा हुआ है? कैसे यह सुरक्षा की बात आई है?

कांग्रेस की ओर से नटवर सिंह जी बोले। वे विदेश मंत्रालय के साथ वर्षों तक जुड़े रहे हैं। अगर उनको माना जाए कि वे विदेश क्षेत्र के विशेषज्ञ हैं तो भी कोई गलत नहीं होगा। यद्यपि वे प्रतिरक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञ हैं या नहीं, मुझे नहीं पता था। लेकिन जब उन्होंने कल मुझे बताया कि प्रो-एक्टिव का अर्थ क्या होता है प्रतिरक्षा की भाषा में, तो मुझे आश्चर्य हुआ। इसीलिए आज मुझे डिफेंस एक्सपर्टस के पास जाना पड़ा। मैंने उनको कहा कि मैंने अगर प्रो-एक्टिव शब्द कहा तो क्या उसका अर्थ यह होता है जो नटवर सिंह जी मुझे बता रहे हैं, उन्होंने कहा बिल्कुल नहीं होता। उन्होंने कहा कि हम आपको बताएंगे क्या अर्थ होता है। उन्होंने अपने ढंग से बताया कि क्या अर्थ होता है, उस पर मैं बाद में आऊंगा। लेकिन कल नटवर सिंह जी ने आरम्भ में कहाः-

"Now, we are entitled to know from the Prime Minister when did this threat begin. Did it begin on the 19th of March when he took over? Or, did it begin on the 8th of April when he gave the green signal to his scientists? ...

Have the Pakistanis mounted an exercise which threatened the city of Amritsar?"

Mark the words. Every word is important - `Have the Pakistanis mounted an exercise which threatened the city of Amritsar?'

And, later on, he goes on to say:

"For 25 years, since 1971, there has been no security threat to India (meaning, from Pakistan). The Simla Agreement has ensured that there is no conflict with Pakistan."

Frankly, I cannot agree with this kind of an analysis of the situation. In fact, it is a total disagreement with this analysis that has made the Government of India take the decision that it had taken.

Subsequently, something similar was said by Shri P. Chidambaram also. Let me quote that also. It would be in place.

Questioning the same security concept Shri Chidambaram said, `The last war with Pakistan was fought 27 years ago'. And then he described how the hon. former Prime Minister, Shri Inder Kumar Gujral in his negotiations with Nawaz Sharif and President Clinton saw to it that so far as relations with Pakistan were concerned they moved towards normalcy.

I would not like to comment on the puerile tactic that he indulged in about the Vajpayee doctrine and the Advani doctrine because that is a very pet copy of many journalists trying to drive a wedge between the two. I would not expect Shri Chidambaram to do that.

Shri Natwar Singh in his speech had said that Shri Vajpayee has mentioned Nehruji and Indiraji, but perhaps he did not mention Rajivji and that it was understood. He said something like that. He quoted Rajivji who had made a very fervent appeal for nuclear disarmament and said that it did not succeed for different reasons. He said:-

"Rajiv Gandhi said that all nuclear weapons should be abolished by 2010 and Gorbachev came out with a proposal, if I remember correctly, that the nuclear weapons should be abolished by 2005. Then the Soviet Union disintegrated."

I do not know why Shri Natwar Singh or Shri Chidambaram conveniently disregarded the fact that in 1991 just before the elections, the Congress Party came forth with a manifesto and let us see what the manifesto says. It took cognizance of the threat that this Government has taken cognizance of. The 1991 election was fought by the Congress under the leadership of Rajivji. The 1991 Congress manifesto was prepared under the aegis of Rajivji. On Page 54 it says:-

"We are deeply concerned that Pakistan is developing the nuclear weapons. It is hoped that they will desist from this disastrous path. They have already inflicted four wars upon India. In case Pakistan persists with the development and deployment of nuclear weapons, India will be constrained to review her policy to meet the threat".

Generally, I am sure, in all documents of this kind Shri Chidambaram has a role. But I do not know whether he had any role in drafting the 1991 manifesto. But this is what I read. Have you read this? I was really surprised. This was the manifesto of the Congress Party.

SHRI RAJESH PILOT : We still say and had been saying that we keep the options open. We have all along been saying that weaponisation would damage our foreign policy. ... (Interruptions)

SHRI NATWAR SINGH (BHARATPUR): Shri Advani, I am very glad that you have read this. What is wrong in it?

SHRI L.K. ADVANI: I do not see anything wrong in this.

I only say that there is a threat perception which you tried to deny to this Government. ... (Interruptions)

SHRI NATWAR SINGH : We expect you to do better. It is feeble.

SHRI L.K. ADVANI: You have done as badly as you can. I will try to do better.

Sir, this is in so far as the security environment is concerned. I said that I would have ordinarily not intervened in this debate and left it to the intervention by the Defence Minister and then the final reply by the Prime Minister.

In so far as the relations with other countries are concerned and in so far as external security is concerned, they are the concerns either of the External Affairs Minister or of the Defence Minister. But I do believe that in so far as relations with Pakistan are concerned, they impinge not only on our external security but also on our internal security; and as a person who has been entrusted with the responsibility of looking after internal security, I feel that I can contribute something to this debate.

I believe that since 1947, Pakistan which declared itself a theocratic State has failed to reconcile with the fact that India has declared itself a non-denominational secular State, because commitment to theocracy and commitment to the two-nation theory logically lead to Kashmir becoming a part of Pakistan. But it did not happen. The leadership of Kashmir and the people of Kashmir decided to go along with India; and they have remained a part of this country since then.

Pakistan's failure to reconcile with this fact has been at the root of many problems that the country is facing in Jammu and Kashmir. That is how, there was a war in 1947, there was a war in 1965 and in a way, even the war in 1971 was related to that. But having failed in all the wars, they adopted a certain strategy which those concerned with India's security can never afford to discard and ignore. It cannot be done. Only those who discard it can think in terms of making statements of this kind: "Are they mounting an attack on Amritsar? Are they doing this? After all, they have very good talks with us. The Gujral doctrine was functioning very well; if you want to throw it overboard, you can do it. Why do you talk about threat perceptions when there are no threats at all? It is hunky-dory all along." It is only that kind of thinking that shows that we are totally oblivious of it or we shut our eyes ostrich-like to the fact that after the war in 1971, Pakistan decided upon a different strategy.

If any one of us had read the speech of President Zia in the meeting of Army Officials, they would have come to know what he had meant by `Operation Topac'. He spelt out what Operation Topac meant, in that meeting. Topac is supposed to be a guerilla warfare hero of South America. He undertook the guerilla warfare against the Spaniards who ruled those States there. After his name, this Operation Topac was conceived. What are the elements of this Operation? Operation Topac has three overlapping stages. The first is to raise the level of anti-India feelings among the people of Kashmir; the second is to create militancy and project it as a home-grown Islamic uprising and the third is to bring about a state of collapse in urban as well as rural areas with Srinagar as the centre of gravity for political and religious mobilisation.

Sir, I quote what President Zia had said at the Conference:

"In the past, we have opted for hamhanded military operations; and therefore, we failed. We must keep our military options for the moment, as a coup de grace, if and when necessary."

This is what President Zia had told his Army Officials when he unravelled this Operation Topac. We cannot afford to ignore that and we cannot afford to ignore what happened further because shortly after 1971, Pakistan went ahead in the direction of becoming a nuclear power itself.

And I believe that Pakistan's strategy vis-a-vis, Jammu and Kashmir has been two-pronged. On the one hand, to pursue this Operation Topac and on the other hand, to become a nuclear weapons power. And if you become a nuclear weapons power, then, what happens?

Now, here I have a document produced by the US House of Representatives, Washington and this document has been prepared by the Congress, namely, Task Force on Terrorism and Unconventional Warfare. The main author of this article is Mr. Yossef Bodansky. Mr. Bodansky is the Director of this Task Force on Terrorism and Unconventional Warfare. He says:

"The ISI's support for the Islamist insurgency and terrorism in Kashmir is a direct by-product of Pakistan's grand strategy.

And this is the grand strategy. This document says:

"In mid-February, 1995, a Foreign Ministry spokesman of Pakistan warned that "if India carries out another aggression and war breaks out between Pakistan and India, it would not be a war of a thousand years or even a thousand hours but only a few minutes and India should not be oblivious to the potential devastation." (The "thousand year war" is a reference to Zulfiqar Ali Bhutto's statement of the extent of Pakistan's commitment to a struggle with India.) Other Pakistani officials were quick to clarify the statement. They stressed that the statement "warned India not by implication but in clear terms that the next war will only last a few seconds and will bring inconceivable destruction and devastation. This clearly indicates that the Pakistani Government has bravely displayed its nuclear capability." The officials added that "Pakistan is really in a position to strike a heavy blow against India through its nuclear capability."

Shri Shiv Shankar is not there. I wish he was there. This may be a bravado...(interruptions)...He is there. This may be a thinking in terms of an imaginary misadventure. I was surprised that he used the word `bravado' against Shri Vajpayee and his Government. He used the word `misadventure' against Shri Vajpayee when even the NAM Conference felt that there was no bravado. This is only a kind of protest against nuclear apartheid sought to be imposed on India by the nuclear weapons countries. It was supposed to be a natural thing that India had to do when it was thinking of its security. It is something that has been endorsed by millions in the country. You go to any part of the country. You go to the villages; you go to the towns; you go to the cities. Except for the dissonant voice that was heard in this House yesterday, there will be a very few dissonant voices. It will be the same kind of elation and joy. In fact, people from abroad kept ringing me again and again that for the first time, they feel proud that we are there and till now, no one took notice of us...(interruptions)...

I entirely agree with what Shri Indrajitj Gupta said that bomb by itself cannot provide security. I agree with him. Vietnam did not have a bomb. America had a bomb. Yet, Vietnam withstood their onslaught for years on end. You have to create that kind of patriotism and self-pride. It is an occasion like this which instills that self-pride and create patriotism. But when everything is prevented like there will be sanctions now there will be a burden that will come which you will have to face when you have no delivery system and nothing to match that, you will have to pay Rs.40,000 crore to the Army and the Armed Forces. Are you trying to instill patriotism? Are you trying to build up the morale of the people? What kind of contribution are we going to make?

I would have no objection to legitimate criticism. But to say that there is no threat at all and everything is hunky-dory, I am sorry, I cannot agree with it. This Government cannot agree with it. This Government has not kept anyone in the dark. From day one, we said that we would do it.

We talked of a nuclear deterrent. For anyone to argue how can there be a nuclear weapon for defence, we never used the word `defence' really. We simply said that we had no aggressive intentions for anyone. But `deterrent' is something which has been the principal reason. Even though many powers in the world have had nuclear arsenals which could destroy the world many times, even then, after Hiroshima and Nagasaki, no one has used them. One reason is deterrence. That is one reason. That is not the only reason. I entirely appreciate it. Therefore, this Government's policy is not confined to simply going in for nuclear explosion and on that basis go on thinking that we are secure.

SHRI P. CHIDAMBARAM (SIVAGANGA): As long as you were using the word `nuclear deterrent', I did not want to comment. But I want to read from Prime Minister's statement. I was surprised by this phrase. Paragraph 10 of the Prime Minister's statement says:

"We do not intend to use these weapons for aggression or for mounting threats against any country. These are weapons of self-defence."

I wanted to know what you meant by a nuclear weapon for self-defence. That is what I asked yesterday.

SHRI L.K. ADVANI : This is precisely what I would explain. Deterrence itself is defence. After all, when a country has a nuclear weapon, it uses that weapon even for diplomatic coercion. It has used it in the past. Countries have been doing it. We would not like to be subjected to that. It is in this context that the Prime Minister used the word `defence'. It is for us.

Similarly, because you have mentioned this, I would like to say that conscious of what was happening in Kashmir, conscious particularly of the fact that in the last couple of months or three months, the militants and their mentors across the line have decided upon a new strategy in Jammu and Kashmir. Earlier, the focus was on the Valley: attack people in the Valley and kill people in the Valley so that the minorities - the Hindus - in the Valley quit the Valley. And having succeeded in that design, they turned their attention elsewhere and decided: "Let us go to the Jammu region of Jammu and Kashmir State and from there try to drive out the minorities."

Immediately after getting the report about Udhampur, I personally went there and visited those hamlets. So, in that kind of massacre that had taken place in which 26 persons - men, women and children - were killed in cold blood, not one of them was shot with a bullet. But everyone of them was cut into pieces. The purpose was very clear to see that all these people belonging to the Hindu community migrate from there and gradually not only the Kashmir Valley but the adjunct parts of Jammu province, namely, Udhampur district, Rajouri district, Poonch district and Doda district are also ethnically cleansed according to these militants. So, immediately as persons connected with internal security, we decided to convene a high level meeting. I am happy to say that all people concerned attended that meeting. The Governor of Jammu and Kashmir, the Chief Minister of Jammu and Kashmir, the Chief of Army Staff, representatives from the Prime Minister's Secretariat and the Government of India, the Defence Minister and all of us today came to the conclusion that one of the shortcomings in our approach to militancy in Jammu and Kashmir had, till now, been that we had been reacting to what they did.

So we said that let us try to evolve a policy which is not reactive, but which is pro-active. In case of Udhampur I said that after these incidents have occurred we have arrested a few people. Why did we not flush out these terrorists beforehand? We should have flushed them out beforehand and saved these citizens from this kind of a massacre. That is the context in which I used the word `pro-active'.

In fact, at the Press Conference, some of them asked does `pro-active' means hot pursuit, chasing the enemy across the Line of Control? I said, `no, pro-active means simply pro-active, that we do not react. We should take pre-emptive action'.

Now, I am told by my friends in the Lok Sabha that what I have said is highly objectionable. Accordingly to them, in Defence parlence what I have said means that our Army will go right across the border and go and attack the enemies there. In the other House, today, some Members mentioned that Indian Army has already done that. This is totally baseless.

श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद (अनन्तनाग) : आपने कहा कि पाकिस्तान की पॉलिसी में कनसैन्ट्रेशन सिर्फ कश्मीर पर रहा है। आपको याद होगा कि डोडा डिसट्रिक्ट में हिन्दू मुसलमान रहते हैं। उन्होंने गांव-गांव में जाकर काम शुरु किया। भारत सरकार और हमारी सिक्योरिटी फोर्सिज ने वहां उग्रवाद को रोकने की जो कोशिश की उसमें वे बिल्कुल नाकामयाब रहे। आप वहां एक स्ट्रेटजी इवाल्व करना चाहते हैं। सिक्योरिटी फोर्सिज सिचवेशन को डील कर रही है। उन्होंने डोडा में सिचवेशन को कंट्रोल किया। इसलिए यह कहना सही नहीं है कि उनका फोकस सिर्फ कश्मीर था और वे अब जम्मू आने लगे हैं। उन्होंने डोडा डिसट्रिक्ट को मेनली कंसैंट्रेट किया। डोडा में सिक्योरिटी फोर्सिज सिचवेशन को कंट्रोल करने में कामयाब हुई। इसलिए नई पालिसी की जरूरत नहीं है।

श्री चमन लाल गुप्त : मुफ्ती साहब ने जो बात कही, हकीकत में कश्मीर वैली से हिन्दुओं को निकालने के बाद उनका ऑपरेशन डोडा डिसट्रिक्ट पर था लेकिन डोडा के लोगों ने मिल कर रैजिस्ट किया और खास तौर पर कहा कि वहां बकायदा डिफैंस कमेटी बननी चाहिए। वे बनीं। हालांकि डिफेंस कमेटी को जिस तरह की सहूलियतें मिलनी चाहिएं, वे बिल्कुल नहीं मिली। इसके बावजूद भी पुलिस के १८ थाने खाली हो चुके थे। जहां-जहां मिलिटैंटस ने पुलिस पर हमला किया, वहां वे खाली हथियार देकर भाग गए। वहां केवल लोगों ने उन्हें रैजिस्ट किया। यह बिल्कुल हकीकत है। आडवाणी ने सही कहा कि इलैक्शन के बाद उनका ध्यान पूरे के पूरे जम्मू रीजन पर है। वहां पिछले दिनों २६ लोग मारे गए। रजौरी और पुंछ में पिछले नौ वर्षों में एक भी घटना नहीं हुई थी। आज रजौरी और पुंछ पूरी तरह मिलिटैंटस का अड्डा बना हुआ है। मेरा यह कहना है कि उनका सारा थ्रस्ट जम्मू रीजन पर है।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं चमन लाल जी को कहना चाहूंगा कि यह सोचना कि कश्मीर वैली बिल्कुल संकट से मुक्त हो गई है, ऐसा नहीं है। उनको जैसा सूट करेगा, वे वैसा करते रहेंगे। हमें कश्मीर वैली और जम्मू रीजन में सावधानी बरतनी है। उनका ऑपरेशन टोपैक का लक्षय भले ही जम्मू-कश्मीर हो लेकिन कुल मिला कर पाकिस्तान ने अणु शक्ति बनने का निर्णय किया तो हमारी चिन्ता अणु शक्ति बनते हुए पूरी सुरक्षा की है और विश्व भर में अपना योग्य स्थान पाने की है। साथ-साथ विश्व भर में न्यूक्लियर अपार्थिड की पालिसी कुछ देश चला रहे हैं, उनके प्रति विरोध प्रकट करने की है।

Pakistan's nuclear policy is India-specific. It is directed towards India and that too Jammu Kashmir-specific.

हमें इसमें भ्रम और गलती नहीं होनी चाहिए।

जहां तक युद्ध का सवाल है, तीन-तीन और चार-चार युद्ध हुए हैं जिन का कई लोगों ने जिक्र किया। १९४७-४८ के युद्ध में २०० लोग मरे थे, १९६५ में ३८०० लोग मरे थे, १९७१ में ४६०० लोग मरे थे। इस तरह लगभग दस हजार लोग मरे थे।

लेकिन अकेले कश्मीर में शायद १८००० लोग मरे हैं। ये सारे प्रौक्सी वार हैं और उसके बाद हम कहें कि कहां प्रौक्सी वार है, प्रौक्सी वार की बात करने वाले,

They are hawks. This is a hawkish statement. I have heard this criticism.

अभी कल ही के भाषण में निकालकर बता सकता हूं जिसमें वाजपेयी जी को कहते हैं कि यह आपकी पौलिसी नहीं है, यह तो आडवाणी डाक्ट्रीन है।

In this case I would give all credit to Shri Vajpayee. He has executed this entire programme in a manner in which it ought to have been executed. I am not aware of it but you have said that he gave clearance to the scientists on the 8th of April. It may have been reported in the Press. I would not even ask him but I do know that even the Raksha Mantri or myself, or those who came to know of it came to know only when it was necessary for him to communicate it and approximately at the same time he was even looking for Shri Sharad Pawar to communicate to him this decision of the Government. So, I would say that he has conducted this entire exercise in an exemplary manner; in a manner in which the Prime Minister of a country ought to have done it. Therefore, today we can be proud of the fact,

कि हिन्दुस्तान में इतना बड़ा काम हुआ और कोई बिकाऊ आदमी नहीं निकला -- पोखरन में हो, चाहे हमारी सेना में हो, चाहे वैज्ञानिक हों, कोई बिकाऊ आदमी नहीं निकला। ऐसा नहीं हुआ कि हमको जांच करनी पड़ी कि कैसे पता लग गया लोगों को। अब जांच उनको करनी पड़ती है कि हमको कैसे पता नहीं लगा। ये सारी चीजें इतने गर्व की हैं जिन पर मैं समझता हूं कि हरेक को प्रसन्नता होनी चाहिए और हरेक को वाजपेयी जी की सरकार को बहुत-बहुत साधुवाद देना चाहिए। हां, आपके जो सवाल हैं, उन सवालों के बारे में ज़रूर यह सरकार सोचेगी कि आगे के बारे में क्या है। प्रतिरक्षा मंत्रालय सोचेगा कि आगे के बारे में क्या है, लेकिन मैं कह सकता हूं कि आज जहां देश के जन-जन में इसके कारण उल्लास है, वहीं सेना में, वैज्ञानिकों में, मुझे बताया गया कि कुछ वैज्ञानिकों की सूची है, कुछ लोगों ने आलोचना की है लेकिन कई लोगों ने मुझे उसमें नाम बताए कि जिनका विज्ञान से किसी तरह का संबंध नहीं। हो सकता है मैं भी जानता हूं, लेकिन कोई वैज्ञानिक है तो मैं कह सकता हूं कि उसमें कोई दिक्कत की बात नहीं, मतभेद रखना अच्छी बात है, लेकिन बेसिकली मैं समझता हूं कि आज जो काम भारत सरकार ने किया है, उसने जन-जन की इच्छा की पूर्ति की है और साथ-साथ देश की सुरक्षा को ध्यान में रखकर उन्होंने एक सही निर्णय किया है जिसके लिए मैं उन्हें साधुवाद देता हूं।

SHRI INDRAJIT GUPTA (MIDNAPORE): I would like to get some clarification on one point. As far as I could understand it, the entire speech of the Minister of Home Affairs was aimed at showing that the main threat to our security is coming from Pakistan. The whole thing has been analysed on the basis of a threat from Pakistan, whereas the Defence Minister was shouting against China all the time saying that the whole threat is coming from China. This is why I have said that the Government should learn not to speak in different voices but if possible, in one voice.

">SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): Mr. Chairman, Sir, the Home Minister chose to intervene in this debate because according to him Pakistan is such a threat that it was essential to have this explosion.

SHRI L.K. ADVANI: I have said that insofar as Pakistan is concerned, it impinges not only on external security but also on internal security. I have not made any comment on foreign policy or Defence in general.

SHRI K. NATWAR SINGH : Do you need an atomic bomb to fight a proxy war? Let us know this.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE: Mr. Chairman, Sir, yesterday the intervention by the Defence Minister was more defensive about maintaining his position in the Government. He was very very defensive in his speech. It was not the usual George Fernandes' performance. The performance of Shri Advani just now clearly shows the confusion that is there in this Government.

They are groping in the dark to find out a justification now, specially so after the statement of the Prime Minister yesterday. I think, Mr. Chidambaram was right in asking that question on the difference between the approach of the Prime Minister and the approach of the Home Minister. Following his clarification, that question becomes much more pertinent.

The main theme of Mr. Advani's speech, apart from what this country apprehends from Pakistan, is that to rouse a sense of pride amongst the people of this country this was necessary; that it is the greatest achievement and the people of this country feel proud of it; that there is jubilation all around; and that now there is acknowledgement of the role of the BJP Government under the leadership of Mr. Atal Bihari Vajpayee. This is the only real achievement of this exercise.

Sir, we yield to none in accepting the signal contribution made by the scientists and engineers in this respect. It is not the monopoly of that side to express their views of support and acclamation, we also do that. But the question is, this achievement is now sought to be utilised for objectives with political overtones.

I recall the Special Session of Parliament held in celebration of the Fiftieth year of our Independence when we spent hours and hours for several days to discuss the situation prevailing in this country, things ailing this country, apart from the achievements we have been able to make. The present Prime Minister was then the Leader of Opposition, incidentally. I think, that role suits him much better. He made an eloquent speech then. But never did we hear of any reservation expressed by him about our security perception or of the threat this country was supposedly facing. When we were covering the entire gamut of the economy and other aspects of this country, he never advocated any change in our well-established and long-standing nuclear policy.

During that debate, we discussed about poverty, about hunger, about unemployment, about unrestrained population growth, about health care, illiteracy, power shortage, water shortage; we discussed about probity and transparency in public life; and we spoke about criminalisation of politics and many other things. I think, I am sure everybody will agree with me, that the strength of a country depends on curing these ills.

Even after fifty years of Independence, half of the people in this country are below the poverty line. Millions and millions of people are without jobs. When Mr. Indrajit Gupta rightly pointed out yesterday that there was shortage of water and power in the Capital, Mr. George Fernandes ridiculed him -- as if that was also a great achievement of this Government -- saying that the discussion was on nuclear power and, therefore, one should not raise the question of shortage of power and water in the capital of this country. During the Question Hour yesterday, or today itself, Members from all sides of the House clamouring for drinking water and asking the Minister to find out means to supply drinking water, shows the position in which this country is.

We never said that we do not want scientific development. We were also very happy and proud when our scientists were able to make a super computer following the denial of the USA to supply one. We also acclaimed the scientists of this country when they placed our satellites in the orbit. We have been openly applauding their achievements. We are proud of the fact that in spite of several restraints and shortages, in spite of lack of full finances and facilities, our scientists and engineers had been able to attain great achievements with high level of dedication. We are proud of them.

1700 hours (Dr. Laximarayan Pandey in the Chair)

But do not try to arrogate that to your political purposes. We are now told of this security problem. Yes, there is a security problem. Since that unanimous resolution that was passed in this House, the only important development that has taken place has been the installation of this Government under the leadership of Shri Atal

Bihari Vajpayee. A Government which is nothing but composed of a rickety coalition of all sorts of political parties and with no commonality of interests or policies, apart from somehow to get in and remain in power.

Since 19th of March, this Government has come into being here and we have seen how the mutual bickerings have taken place between its constituents, how bullying tactics have been adopted by the different components of what I call these `hoax' of a coalition. Three Ministers have already gone. Several Ministers are under charge-sheet with the demands made by one against the other in the coalition asking for their resignation. And throughout this period, you have seen a non-performing Government with a lot of packages and the Prime Minister in bondage. He was completely quiet. He was not saying anything. He was almost on hibernation for all these days.

17.02 hrs (Mr. Speaker in the Chair)

My very good friend, the Deputy-Chairman of the Planning Commission had hardly time to enter the Yojana Bhawan. He was perambulating all across the country undertaking damage control activity.

Now, Shri Ramakrishna Hegde, the Commerce Minister, a very close associate of our distinguished Prime Minister has said that our Prime Minister is fatigued; he is frustrated; he is tired, how can he function? But suddenly we find that our Prime Minister has become very bold and very active. Although he still looks very unhappy. I am sure, he is not happy.

Whatever happened on 11th and 13th May, along with the people of this country - according to Shri Advani's perception - our Prime Minister is also proud. Now, they say the whole justification is a question of security perception. Yes, security problem is there, but more of the parties; more of the Government, than of the country. But, in the name of patriotism, Shri Advani and Shri Vajpayee will not allow any of their allies to raise any discordant voices, no more claims; no more demands; the packages have now been sealed and the Agenda is now very clear - `Hindu Nationalism'.

Mr. Speaker, Sir, never in the history of Independent India that such a momentous decision has been taken on such narrow, partisan political purpose to save the Government which has a tenuous support from only a quarter or 25 per cent of the people in this country. This feeling is reinforced by one of the important functionaries of this Government and of the Sangh Parivar. Sangh Parivar has loaned a very important economist to BJP now. I quote:

"India going nuclear has always been on the BJP agenda. But right now, the explosions were our insulation against instability. Not only does it protect us from the irritation or blackmail - the blackmail of allies...."

It has also projected the BJP and the Government capable of taking hard decisions.

The object is very clear. Now, what we find is -- and I do not know whether the Prime Minister's clearance was obtained -- that Mr. Seshadrichari, Editor of the RSS Mouth Piece, `Organiser', toured the Bhabha Atomic Research Centre even as the countdown had begun. He said that it was a friendly visit. Suddenly, he makes a friendly visit to Bhabha Atomic Research Centre just before this explosion. `Organiser' was the newspaper which first published this news on the 11th of May itself. These are very serious matters.

Now, I would say about Shri Govindacharya. Nobody would deny his authority. He said and I quote, -- kindly see the comparison -- "Like the feeling attached to Ayodhya, the nuclear tests are an emotional nationalist assertion." This is the response. Then, of course, our good friend, the Political Advisor to the Prime Minister, the `Smiling Buddha' all the time, said, "It is not a nuclear test, but a test of nationalism."

Mr. Speaker Sir, the BJP's Executive of Rajasthan chalked out a plan for the Prime Minister to hold a public meeting. He did not agree to that probably, but that was the decision of his Party Executive of Rajasthan. A senior BJP leader said, "there would be religious pilgrimage in Pokhran following which rallies would head, some with the sands of Pokhran". The emotion behind the proposal to spread Pokhran sand was to spread the feeling of national self-confidence. All these things are not necessary.

There was a spontaneous rousing of the feeling of pride and fulfilment...(Interruptions) Yes, it is so far a scientific achievement and it should be kept there. I agree with them fully. But they are utilising it for purposes which the scientists will shudder from. We were not thinking of the mileage to be given to BJP, not to this Government and not to the Prime Minister. Sir, strange arguments are being put forward by the senior Members, including a Minister on the opposite side, that the scientists are getting frustrated, they are going to retire soon, so, before their retirement something must be done.

Sir, unfortunately everybody has to retire some time or the other. That was said today also by Shri Barnala. Shri Jag Mohan said yesterday that they were getting frustrated. To avoid frustration of our distinguished scientists, Shri Gujral had rightly decided to confer `Bharat Ratna' on one of them. They will go on exploding nuclear bombs, nuclear devices. We want them to continue with full vigour, full alertness, full control of their abilities and efficiencies. For years and years to come, give them extensions, I do not mind, although there may be other very eminent people. What we are trying to find out is the real objective.

Sir, the BJP manifesto of 1998 said clearly -- I agree that the BJP's stand has been consistent on this -- that India should expedite its nuclear policy and exercise the right to induct nuclear option. But they had to enter into the hotch-potch of a Government. They had to make some adjustments here and there. They said that they had agreed -- so many parties sitting together had entered into an agreement -- to prepare a national agenda.

And this National Agenda, if it was not to hoodwink the people, very categorically said: "We will establish a National Security Council." Sir, this is necessary. So far, the Government's spokesman has avoided this. I had to repeat this because we need an answer to this. It says:

"We will establish a National Security Council to analyse the military, economic and political threats to the nation, also to continuously advise the Government. This Council will undertake India's first ever strategic defence review to ensure the security, territorial integrity and unity of India. We will take all necessary steps and exercise all available options. Towards that end, we will reevaluate the nuclear policy and exercise the option to induct nuclear weapons."

The BJP manifesto did not talk of that but I find, subject to correction, that the National Agenda made a commitment to this.

Now, Sir, the Defence Minister, on the 20th of March, had said: "The nuclear option had been put on hold. We did not say, we were going for nuclear weapons. We will reevaluate policies to ensure security. In the light of that, we will decide on the nuclear option." That was what he had said on the 20th of March. The Defence Minister of India has been withdrawing whatever he is saying because of the Prime Minister's pulling him apparently.

Now, Sir, this National Security Council is not yet formed. Shri Jaswant Singh is a poor chap. I would have liked him to be here. You could not get him here. You are giving all sorts of jobs. Now he has to find out the persons for this Council. Now his job is not over. You are sending him to Chennai so often. How can he have time?

Therefore, without this study, without this review, how could you do this?

Sir, it appears that, on the very first day itself, on the 19th of March, the Prime Minister, Shri Atal Bihari Vajpayee had called Dr. Chidambaram and said: `How do you like this testing?" He came out all smiling, as the newspapers and the journals said. Therefore, this decision was taken on the very first day. This National Agenda was a `tamasha'. I had said, during the last debate, that this National Agenda is a `national tamasha'. Therefore, you do not follow it. Just to arouse a sense of pride, you go back on your commitment to the nation, commitment to all these small fries -- not personal disrespect but party-wise...(Interruptions)

SHRI VAIKO : Do you call us `small fries'? ...(Interruptions)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : No, it is only party-wise, very small parties. You will be swallowed up soon. ...(Interruptions)

Shri Sudharshan of RSS had said that in 1996 -- within that thirteen day constitutional aberration, as I had said earlier -- the BJP was having a nuclear explosion in mind. But at that time there was no Ghauri. Even then you decided it.

Shri Advani, during that time you were not in the Government. We duly appreciated your desire not to come back without the clearance but that charge-sheet has remained with you. However, there is another charge-sheet. Somehow, charge-sheets are not leaving you.

Now, Mr. Speaker, Sir, coupled with this, we find a decision to have a monument there called `shakti peeth' and also to construct a temple. What is the message to the people?

We have a very very competent Minister for Information and Broadcasting. Of course, she cannot control that 71 year old person but she has her own tentacles.

She knows. She maintains very good equation with people who met her in different sections of the media. Now, lo and behold, Shri Gill does not control Star Plus, Zee TV and TVI. Therefore, generally all these are orchestrated exuberance of the people as if they are caught hold of from the market. So what do you see? Hail Shri Vajpayee. Only BJP could do this. But these are the types of responses that you see.

SHRI INDRAJIT GUPTA : Even she is doing all this.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : She is inspiring. I know her wishes are sufficient. Therefore, it is not a question of mere scientific test, Mr. Prime Minister, it is a question of scientific test plus something. That is why, we are here. Some of you are saying that we are traitors, we are un-patriotic or not patriotic enough, but Sir, we have always supported whichever Government was in power. At least our Party has never been in power. It is a party of self-abnegation. You know that. We did not want, although you offered the Prime Ministership.

Sir, we have always said on this issue of fighting terrorism in Punjab, on fighting insurgency in Jammu and Kashmir that we shall support the Government. Our Party has had to sacrifice many lives in Punjab and also in Kashmir. Our comrades have laid down their lives for maintaining the integrity of this country. Therefore, do not think that it is only your Party's great prerogative but it is also a right, prerogative and duty of every Indian in this country. I am happy that our Party has contributed, maybe, not in the so vocal sense as you are able to do.

But today on the basis of these scientific achievements that have been made, you now want to, as I said, arrogate every credit. Rightly, Shri Chidambaram said that there can be only three questions. Of course, he mentioned the most important course as the last one. But that is the first course which is the real one.

Today naturally you are not happy. With this motley crowd, how can you be happy? They are not allowing you to function properly. Therefore, Mr. Prime Minister, the attempt to try to show to the people that a great decision has been taken, a great achievement by you, is not true. Shri Mulayam Singh Yadav has rightly said everything was ready. You did not have to do anything except to take a decision.

But the question is: why are we worried? After a long, long period of time and assiduously with great effort and great, as I said, diplomacy, things were becoming normal. Since the visit of Shri Rajiv Gandhi in 1988 to China, things were much more normal. We are inching and even we have been faster than anybody towards normalising the relations. The answer that you have given yesterday on the floor of this House clearly belied whatever may be your today's versions about the situation in China about which Shri George Fernandes spoke not so eloquently yesterday. Today, either they have divided the two enemies or they have shown their confusion.

Mr. Speaker, Sir, a question therefore, necessarily comes and the Government has to answer. I rightly appreciate Shri Advani's great intelligence and his choice of words. I always admire him. I have been admiring him. Now with his present approach, I do now know, where he will take us.

But yesterday something very interesting was said. We had to ask, "Why now?" Why, within few days of your assumption of power, 19th March to 8th of April, what happened? Can we not ask as Members of Parliament, as

representatives of the people? And rightly you reminded you were only 25 per cent. Can we not ask "why now? What happened without this strategic review which you have promised to the country? Why? Where was even Shri Sharad Pawar that the Prime Minister of India could not get hold of him? I do not know. Had you gone abroad, Shri Pawar?

AN HON. MEMBER: He was in Chennai!

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Even he could have gone.

Therefore, you could not get the Leader of the Opposition of this country to talk to him on such an important matter.

AN HON. MEMBER: He was gone to Chennai secretly.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : With Shri Lal Krishan Advani in charge of the security it should not have been difficult, I do not know. And surely he is being followed by the system.

Now Shri George Fernandes was very `intelligent', if I may say so within quotes that "it was now": because it was not done earlier! It is a flippancy coming from the Defence Minister of the country! He said, "Yes, it was now because it was not done earlier." I was amazed. The sooner you get rid of him the better for this country! He is no longer the same George Fernandes. He is a very small `g' and a very small `f'.

The question is, nuclear option we have always said, `do not give up.' As you have been saying very repeatedly the country has been one. Do not forget that Mr. Prime Minister, on non-signing the CTBT. Everyone in the country has supported. When you were sitting or standing there we have supported you and we have said, "Do not sign CTBT and do not be a party to NPT whatever may be there. On that we have our options. Now why do you give up at the same time India's great position in the world today? That, although we are in a position to do it we are applying self-restraint. But we are keeping our options open and at the same time trying to bring about a total disarmament. Of course that is our objective. It is not easy. Persons of great eminence like the former Foreign Minister and Prime Minister Shri Gujral have been trying. I am no expert at all. Everybody in this country is trying to maintain that position that, yes, we see that India's long standing policy is the twin-component of refusal to surrender the nuclear option by acceding to the NPT regime and self-imposed conditional restraint in not militarising the option has been our policy. And this policy has failed. And when we ask here, when some of the distinguished hon. Members ask here how how have those explosions stopped the activities that you are complaining of, yes, we are today complaining of this proxy war.

Shri Natwar Singh has rightly just interjected a minute back. This proxy war was controlled. Of course, Shri Mulayam Singh Yadav has said that we shall support you in all matters of use of conventional weapons and rightly pointed out how you can have a nuclear weapon as a weapon of defence. These things require to be explained, Mr. Prime Minister.

Now today at two o'clock I had a news item on the TV that the explosion in Pakistan is imminent. Now, what will you do? What will happen? Are we not getting into an arms race? Can this country afford? Can our sub-continent afford to have it?

Is it not our objective to have friendly relations with everybody in this world particularly with our neighbours? Are we achieving it? Of course, we yield to none in our concern for maintaining our security. Everything is required to be done. You have decided a moratorium. Now, suddenly my good friend, Shri Brijesh Mishra is talking of - obviously with the hon. Prime Minister's clearance - a possibility of being a party to the C.T.B.T. He says and I quote:-

"India would be prepared to consider being an adherent of some of the undertakings in the Comprehensive Test Ban Treaty."

What are the thinkings? But this cannot obviously be done in a vacuum. It

would necessarily be an evolutionary process from concept to commitment and it depends on a number of reciprocal activities. What is the thinking of the

Government on this? We see nothing from the hon. Prime Minister either a statement or the enclosure. What is this? Please tell us.

Our Minister of Defence has said that our weaponisation is complete. He says and I quote:-

"Without weaponisation, this whole question of being a nuclear weapons State does not make any sense. Nuclear weaponisation is necessary and in the ultimate analysis, inevitable. Arguing that nuclear weapons had always been seen as a deterrent, he said, "No one is talking of nuclear war. There is only one instance when nuclear weapons were used and we know the circumstances. Nuclear weapons will only be a deterrent."

It was not deterrent so far as urges and aspirations of Vietnam were concerned; of the people of Iraq were concerned, or wherever there have been such situations. He wants to say that he utilised this for this purpose and the Government is not explaining to anybody. The hon. Prime Minister owes it to the country to reply. Why did he write to President Clinton stealthily on the 11th May itself? What was the objective? Why did he do that? Is he trying to keep America in good humour and trying to make out a case of China and Pakistan being security threats to this country? Is that the statement? (Interruptions).

SHRI K. NATWAR SINGH : Will the Government try to confirm whether Pakistan has exploded two nuclear devices or not? Will they please confirm it? (Interruptions).

SHRI S. JAIPAL REDDY : It is necessary for the Government to confirm. Will the Government confirm it? (Interruptions).

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Now, the situation is much more serious. (Interruptions).

MR. SPEAKER: Let us wait. Please wait.

... (Interruptions)

डा. शकील अहमद : अभी-अभी न्यूज आई है कि पाकिस्तान ने दो एक्सप्लोजन किए हैं, क्या सरकार इस बारे में कन्फर्म करेगी? क्या सरकार इस बारे में कोई वक्तव्य देगी? यह बहुत गंभीर मामला है।

... (व्यवधान)

श्री बेनी प्रसाद वर्मा (कैसरगंज): प्रधान मंत्री जी को फौरन सदन में आकर बताना चाहिए। पूरे सदन को इस बारे में चिंता है।

... (व्यवधान)

डा. शकील अहमद : सरकार को कन्फर्म करना चाहिए कि यह बात सही है या गलत है। ... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Please take your seat. She has already sent a message.

... (Interruptions)

सूचना और प्रसारण मंत्री तथा संचार मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज): मैं अभी ऑथेंटिक न्यूज लेकर पांच मिनट के अंदर बताती हूं।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Please take your seats. They have already gone to find out the facts.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please take your seats. The Minister is on her legs. She is giving the reply.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: The hon. Minister is giving the reply.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: The hon. Minister is on her legs.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: The Government is giving the reply. Please take your seats.

... (Interruptions)

श्रीमती सुषमा स्वराजः अध्यक्ष जी, अभी सदन में बैठे-बैठे, मुझे यह सूचना दी गई है कि साढ़े तीन बजे आज पाकिस्तान ने दो टैस्टस कन्डक्ट किए हैं। वही सूचना प्रधान मंत्री जी के पास भी आई है। हम अभी फैक्टस कलैक्ट कर रहे हैं। डिटेल्ड स्टेटमेंट या डिटेल्ड फैक्टस मैं अभी सदन को बताऊंगी। यह जानकारी सही है और दूरदर्शन पर फलैश आया है कि साढ़े तीन बजे पाकिस्तान ने दो टैस्टस कन्डक्ट किए हैं। इस बारे में डिटेल्स कलैक्ट करके मैं सदन को बताती हूं।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Please take your seats now.

... (Interruptions)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Mr. Speaker, Sir, I was on my legs... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Shri Somnath Chatterjee, please continue.

... (Interruptions)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Sir, kindly control them.... (Interruptions)

SHRI SHARAD PAWAR : Mr. Speaker, Sir, the information given by the hon. Minister of Information and Broadcasting regarding explosion by Pakistan, is very serious and I think the House should be briefed properly by the Prime Minister himself. My request will be that the House should be adjourned for ten minutes or fifteen minutes and let the Prime Minister come and brief the House properly. (Interruptions)

... (व्यवधान)

संसदीय कार्य मंत्री तथा पर्यटन मंत्री (श्री मदन लाल खुराना): जैसा कहा गया है कि आज पाकिस्तान ने दो परमाणु परीक्षण किए हैं, यह खबर मिलते ही प्रधानमंत्री जी और ग़ृह मंत्री जी पता लगाने गए हैं।

... (व्यवधान)

आप अगर हाउस को एडजर्न करना चाहते हैं तो मुझे कोई एतराज नहीं है।

... (व्यवधान)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): Sir, no adjournment.

श्री मदन लाल खुरानाः प्रधानमंत्री जी स्वयं आकर फेक्टस देने के लिए चिन्तित हैं, वे फेक्टस लेने के लिए गए हैं।

... (व्यवधान)

वह अभी आकर आपको निश्चित रूप से बताएंगे।

... (व्यवधान)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): Sir, I want to continue my speech. ....(Interruptions)

श्री मदन लाल खुरानाः अभी प्रधानमंत्री जी आकर आपको ब्रिफ करेंगे।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Please take your seats.

... (Interruptions)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Mr. Speaker, Sir, ...(Interruptions)

MR. SPEAKER: Hon. Members, please do not do like this.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please take your seats.

... (Interruptions)

श्री शरद पवार : बात ऐसी है कि यह बहुत इम्पोरटेंट सवाल है।

... (व्यवधान)

अभी डेढ़-दो घंटे पहले एनाउंस किया गया है।

... (व्यवधान)

श्री मदन लाल खुरानाः चार बजे हुआ है।

SHRI TARIQ ANWAR (KATIHAR): It was done two hours before. ....(Interruptions)

Let the Prime Minister come to the House. ....(Interruptions)

MR. SPEAKER: Hon. Members, please listen to me. Please take your seats.

Shri Somnath Chatterjee, one minute please.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please take your seats.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: The hon. Prime Minister and also the Home Minister have gone to ascertain the facts.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : The Prime Minister has come.

May I continue? Does he want to make a statement?

THE PRIME MINISTER (SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE): Would he like to complete first?

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : No. He should categorically state whether the information is correct or not.

श्री अटल बिहारी वाजपेयीः अध्यक्ष जी, अभी-अभी समाचार मिला है।

... (व्यवधान)

श्री विलास मुत्तेमवार (नागपुर) : आधा घंटा हो गया है।

... (व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयीः मुझे जब समाचार मिला, मैं आपके सदन में बैठा हुआ था।

... (व्यवधान)

आपको भी क्या दो घंटे पहले पता लग गया था?

... (व्यवधान)

श्री प्रकाश यशवंत अम्बेडकर (अकोला) : अध्यक्ष जी, सुषमा जी का बयान था कि साढ़े तीन बजे की न्यूज में दूरदर्शन पर यह न्यूज आई है।

MR. SPEAKER: Please take your seat.

श्री अटल बिहारी वाजपेयीः अध्यक्ष महोदय, समाचार के अनुसार पाकिस्तान ने दो परमाणु परीक्षण किए हैं। अभी उनके बारे में और विवरण प्राप्त नहीं हैं। मैं सारे तथ्य इकट्ठे कर रहा हूं और उनको सदन के सामने रखूंगा। अगर परमाणु परीक्षण की बात सच है तो भारत ने इस संबंध में जो नीति अपनाई है, वह उसकी पुष्टि करने वाली है।

... (व्यवधान)

श्री अजीत जोगी : इसके जिम्मेदार आप हैं। इतिहास आपको माफ नहीं करेगा।

MR. SPEAKER: Please take your seat.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Mr. Speaker, Sir, it is a very serious matter. Our apprehension has unfortunately been proved to be true. It is a matter of great concern that a nuclear arms race has started in this Sub-Continent. Now, the other matter of great concern is that the hon. Minister of Information and Broadcasting said that these tests were done by them at 3.30 p.m. But at 5.30 p.m. one of the Members of the Opposition has to inform the Government about it and you just sat here. What is the intelligence in this country?

Sir, no longer the safety and the protection of the future of this country can be left to these people. They are totally unfit to govern. For the purpose of bolstering a tottering Government they have now brought about this serious situation that this country is facing today. Now, in this context, we cannot but describe Shri Advani's intervention as anything else than bravado. He is the Home Minister of India. He was talking about Pakistan's intentions. He said that because of the internal security aspects of the matter he was intervening in this debate and when he was speaking here, Pakistan was merrily going on doing these nuclear tests. This is your intelligence and you want to protect us! (Interruptions)

श्री विजय गोयल : अपने लाभ के लिए आप सरकार की आलोचना कर रहे हैं।

श्री सत्य पाल जैन : आप तो पाकिस्तान की वकालत करके उसके विस्फोट को जस्टिफाई कर रहे हो।

... (व्यवधान)

श्री विजय गोयल : यह तो एक्सपेक्टिड था। इस समय आपको सरकार के हाथ मजबूत करने चाहिए।

... (व्यवधान)

श्री जयसिंहराव गायकवाड़ पाटील (बीड़) : आप इतना डर क्यों रहे हैं?

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Mr. Speaker, sir, the Prime Minister has said that the Government would fulfil all the commitments. What is their commitment? The commitment was to have a moratorium and to provide a weapon of defence. With that commitment, how do you tackle the seriously developing situation?

Sir, I was referring to the Prime Minister's letter to President Clinton when Shri Natwar Singh exploded the bomb here and the Government itself was in the dark. What I was going to ask the Prime Minister was this. They have mentioned about these preparations and nuclear arsenal of China and Pakistan, but they have never mentioned about Diego Garcia.

Are you not concerned about the nuclear arsenal in Diego Garcia? You are going to please and keep that person - the President of U.S.A. whose base is there-- in good humour. He is the first person in the world who comes to know before the people of India come to know. Sir, we cannot approve of this. This is nothing but to divert people's attention from the serious internal situation in this country.

Sir, we saw on the television Shri Atal Bihari Vajpayee wearing a Rajasthani pugri when he gave a speech. May I quote a few lines from his speech? I quote:

'हम यह बात साफ कर चुके हैं और फिर दोहराना चाहते हैं कि हम ऐसी दुनिया चाहते हैं जिस में एटमी हथियारों का उपयोग करने की जरूरत न पड़े। हम किसी के खिलाफ उन हथियारों का उपयोग नहीं करेंगे, लेकिन अपनी रक्षा के लिए अगर तकाजा हुआ तो हम उसमें संकोच नहीं करेंगे।'

He will use it ... (Interruptions). This is your weapon of defence. ... (Interruptions). Let the Prime Minister say that he will use this bomb, if necessary according to him. Sir, very interestingly there was a meeting soon after this explosion. He was addressing the B.J.P. workers and trying to create a situation of frenzy, a feeling of frenzy among them and through them among the people. This is your speech ... (Interruptions). The Prime Minister has used a very significant phrase. May I read his statement? On page four, he says:

"The overwhelming support of our citizens is our source of strength. It tells us not only that this decision was right but also that our country wants a focussed leadership which attends to their security needs."

Now, what is this "focussed leadership"? What is he talking about? This is the object - try to create frenzy, try to create a feeling of great achievement, try to arrogate to yourself the achievements of our scientists and say that this is the leadership which could do that. Therefore, the preparation was not yours. Everything was lying ready. You just took a decision within a day without consulting anybody, without reviewing the security position of this country and without any strategic review which you had promised in your National Agenda. And then you are saying that this is the leadership which has done it. Therefore, what Shri Pramod Mahajan has said, what Shri Govindacharia has said and what your Organisation etc. has said, well this is only the B.J.P. could do it. This is an attempt which you are trying to make in the name of the security of this country. But the question is: will the country permit this? For the purpose of your own narrow political ends, the future of this country has been brought under serious problem ... (Interruptions). This is absolutely wrong.

We never said that. ... (Interruptions)

MR. SPEAKER: That is not proper.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : We said: "Do not try to weaponise the State." You are utilising our achievements to weaponise and now it has been admitted by you that your objective is to have weapons and arsenal. A very relevant question was asked by Shri Chidambaram, that is, whether you would stockpile. You have to answer these things. Your Defence Minister did not

answer it and your Home Minister did not answer it. Now, these are very important questions. Who will answer them?

Now, the new situation that has developed, it seems, is a direct result of this. I do not know, what will happen.

Sir, Shri Vajpayee is a good student of history. After the 1974 blasts came the Emergency, and 1977 was the end of that Government. So, do not be under an euphoria. The question which is most important is the future of this country, future of the teeming millions who are looking for jobs, food, water and electricity. ... (Interruptions)

SHRI C.P. RADHAKRISHNAN (COIMBATORE): We are always against dictatorship. If there is an emergency, then we will be fighting along with you.

SHRI M. SELVARASU (NAGAPPATTINAM): You are not a Minister. Why are you interrupting him? ... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please take your seat.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : In view of the situation that has developed, I want to say that we have to be extremely cautious. It is clear, Sir, that the future of this country can no longer be left in the hands of these power-hungry people. ... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please sit down.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Therefore, Sir, I express my view that although it is a great scientific achievement, this is not the way to play with the future of this country. (Interruptions)

MR. SPEAKER: Hon'ble Members, let there be order please.

As the discussion on a very serious subject is going on, if the House agrees, the matters under Rule 377 pertaining to 27.5.98 and 28.5.98 may be laid on the Table of the House.

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

MR. SPEAKER: They may be laid on the Table of the House.